तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

अक्तूबर-2019 रु.5/-

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव

३०-०९-२०१९ से
०८-१०-२०१९ तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव

२३-११-२०१९ से ०१-१२-२०१९ तक

२३-११-२०१९
शनिवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - लघुशेषवाहन

२४-११-२०१९
रविवार
दिन - महाशेषवाहन
रात - हंसवाहन

२५-११-२०१९
सोमवार
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - सिंहवाहन

२६-११-२०१९
मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - हनुमंतवाहन

२७-११-२०१९
बुधवार
दिन - पालकी उत्सव
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

२८-११-२०१९
गुरुवार
दिन - सर्वभूपालवाहन,
स्वर्ण रथोत्सव
रात - गरुडवाहन

२९-११-२०१९
शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

३०-११-२०१९
शनिवार
दिन - रथोत्सव
रात - अश्ववाहन

०१-१२-२०१९
रविवार
दिन - चक्रस्नान, पंचमीतीर्थ
रात - ध्वजावरोहण

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-३)

हे आचार्य! आपके बुद्धिमान् शिष्य द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न द्वारा व्यूहाकार खडी की हुई पाण्डुपुत्रों की इस बडी भारी सेना को देखिये।

पादस्याप्यर्थपादं वा श्लोकं श्लोकार्थ मेव वा।
नित्यं धारयते यस्तु स मोक्ष मधि गच्छति।।

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव)

गीता के एक श्लोक, आधा श्लोक, एक चरण या एक चरणार्थ को ही सही जो मन में धारण करता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

भक्तों को सूचना

तिरुमल घाट रोड में

१. जीवन मूल्यवान है। इसलिए सडक के नियमों का पालन कीजिए।

२. सावधानी से मोटर घाडी चलायीये-अपने गम्यस्थान को सुरक्षित पहुँचे।

३. तिरुपति से घाट रोड द्वारा तिरुमल को पहुँचने की अवधि कम से कम २८ मिनिट लगेगी।

४. तिरुमल से घाट रोड द्वारा तिरुपति को पहुँचने की अवधि कम से कम ४० मिनिट लगेगी।

५. घाट रोड द्वारा जाते समय आगे की घाडी को पार करने की कोशिश मत करें।

६. घाट रोड में घाडी की इंजिन को बंध करके न्यूट्रल में न चलाये।

७. घाट रोड में मोटर घाडी को चलाते समय सेलफोन में बातछीत न करें।

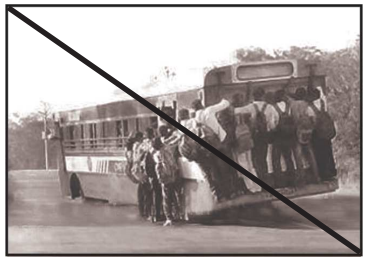
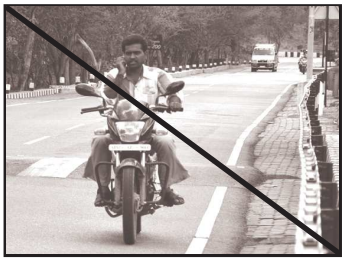

तिरुमल में

तिरुमल पुण्यक्षेत्र में मांसाहार, धूम्रपान, शराब, गुट्का, जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।

तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में

१. तिरुमल श्री बालाजी के दर्शनार्थ मंदिर में प्रवेशित भक्तों ने चप्पल, सामान, सेलफोन, कैमेरा अन्य एलक्ट्रानिक चीजें और आयुधों को न ले जायें।

२. तिरुमल श्री बालाजी के दर्शनार्थ आने वाले भक्त और स्वामीजी की अर्जित सेवाओं में भाग लेने वाले भक्त संप्रदाय वस्त्रों को पहनकर मंदिर में प्रवेश करना है।

पुरुष - धोती, उत्तरीय, कुर्ता, पायजामा

स्त्रियाँ - साडी-अंगिया, लहँगा-ओढनी; दुपट्टा सहित पंजाबी ड्रेस, चूडीदार वस्त्रों को पहनना अनिवार्य है।

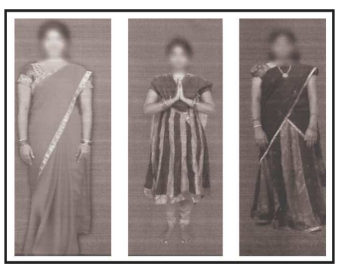

सप्तगिरि

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं
ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन,
वेङ्कटेश समो देवो
न भूतो न भविष्यति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
सचित्र मासिक पत्रिका

वर्ष-५० अक्तूबर-२०१९ अंक-०५

विषयसूची

ॐ नमो नारायण!	श्री के.रामनाथन	07
देवी नवरात्रियाँ सरस्वती पूजा	डॉ.के.एम.भवानी	10
दुर्गा वैभव	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	11
भागवत कथा सागर पृथु महाराज का भगवान के धाम में जाना	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	15
बालाजी श्रीवेंकटेश भगवान की सेवा में महन्त	डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्युलु	17
अखंड ब्रह्मोत्सव सेवा में अष्टदिक्पालक	डॉ.बी.के.माधवी	20
दशहारिणी-दुर्गा	श्री वेमुनूरि राजमौलि	25
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	31
चेतावनी तथा कर्तव्यबोध	डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी	33
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	35
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	37
नरक चतुर्दशी	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	39
प्रकाशपर्व दीपावली	श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया	42
दिव्यक्षेत्र तिरुमल	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	44
श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का मंदिर - तोंडमनाडु	डॉ.एम.रजनी	48
राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	52

गौरव संपादक
श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस्.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, बी.ए., बी.एड्.,
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

श्री पी.शिवप्रसाद,
सेवानिवृत्त चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

मुखचित्र
श्रीदेवी भूदेवी समेता आनंदनिलय भगवान

चौथा कवर पृष्ठ
श्रीस्वामिपुष्करिणी में श्रीवारि चक्रस्नान, उत्सव वैभव के दृश्य

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त किये विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं। *– प्रधान संपादक*

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, 2264360.

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org
वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशियों को वार्षिक चंदा .. रु.850-00

संपादकीय

परमात्मा के दस दिवसीय उत्सवों में भागीदारी होंगे!

पूरे विश्व में अद्भुत् रूप से, और अनंत रूप से विस्तारित एक तेजस्वी, श्रीवैकुंठ से सीधे पृथ्वी पर, लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व, कन्यामास (सौरमास) श्रवणा नक्षत्र के दिन, वेंकटाचल क्षेत्र में स्वयंव्यक्त रूप में प्रकटित होकर, दिव्य प्रकाश से चमक रही है। तबसे उस दिव्य मंगल चैतन्य मूर्ति को ''श्रीवेंकटेश्वर'' नाम से तथा, उस पुण्य स्थल को ''श्रीवेंकटाचलम्'' के नाम से बुलाया जा रहा है। भक्तों को वरदान देनेवाले 'वरदाता' के रूप में, 'कल्पवृक्ष' तथा कामधेनु के रूप में, रोग दूर करनेवाले दिव्य औषध बनकर, ब्रह्मादि देवतावों से ख्याति प्राप्त करने वाले श्रीवेंकटेश्वर को, उस समय से कई सेवाएँ तथा अनेक उत्सव मनाये जा रहे हैं। उन सभी उत्सवों में, साल में एक बार दस दिनों के लिए होनेवाले ब्रह्मोत्सवों के वैभव को वर्णन करना संभव नही है।

स्वयंव्यक्त रूपी श्रीवेंकटेश्वर स्वामी को, कन्यामास में श्रवणा नक्षत्र के दिन तक पूरा हों जायें, जैसा दस दिवसीय उत्सव, अत्यन्त धूमधाम से ब्रह्मदेव के द्वारा मनाये गये ''ब्रह्मोत्सव'', आज तक बडे पैमाने पर प्रचलन में हैं। इस साल, कन्यामास, आश्वयुज मास के साथ आने के कारण, तिरुमल श्रीवारि ब्रह्मोत्सव, आश्वयुज शुद्ध विदिया सोमवार (सितंबर ३०) से आरंभ होकर, आश्वयुज शुद्ध दशमी, मंगलवार श्रवणा नक्षत्र के दिन चक्रस्नान और उसी दिन (अक्तूबर ८) ध्वजावरोहण के साथ ब्रह्मोत्सव परिसमाप्त होगा।

पहले दिन-रात को महाशेषवाहन के साथ शुरु हुए ब्रह्मोत्सव, हर दिन, सुबह-शाम, अलग-अलग वाहनों पर, अत्यन्त रमणीयता एवं मनोहरता के साथ, भक्तों को तन्मयत्व प्रदान करते हुए, चलनेवाले वाहन सेवाएँ, सभी को आनन्द सागर में निमग्न बन जाता है। हर एक वाहन पर आनंदनिलय भगवान का अलंकरण अत्यन्त अद्भुत् है। हरेक उत्सव में श्रीवारि का वैभव वर्णनातीत है। हर बार श्रीवारि के वाहन सेवावों में नयापन दिखाई देता है। हर दिन वाहन वैभव भक्तों को संतोषमय एवं अश्चर्यचकित कर देती है। उनमें विशेष रूप से पाँचवाँ दिन, रात को होनेवाली गरुड सेवा तथा आठवाँ दिन, सुबह ''रथोत्सव'' में भाग लेनेवाले लाखों भक्तजनों का कोलाहल अवर्णनीय है।

जिस प्रकार तिरुमल ब्रह्मोत्सवों में श्रीवारि के वाहनों का वैभव अत्यन्त विशिष्ट है, वैसे ही उन वाहन सेवावों के जाने के मार्ग में, लगातार भक्तों के द्वारा तन्मयता से की जानेवाली, भजन, नृत्य, विन्यास, वेषधारण, संकीर्तन, वेदपारायण, दिव्य प्रबन्ध गान, साहित्य प्रसंग जैसे अनेक विषयों का वर्णन करना असंभव है। इतना ही नही ये सब कार्यक्रम देखने के लिए भी हमारे दो आँख पर्याप्त नही हैं। ब्रह्मोत्सवों में श्रीवारि के वाहन वैभव के अलावा, विचित्र कान्ति से चमकते हुए बिजली के दीपों की सजावट के दृश्य, पुष्पालंकरण, संग्रहालय देखने के लिए लाखों भक्तजन तिरुमल क्षेत्र पहुँचते हैं। श्री वराहस्वामी का मन्दिर, श्रीस्वामिपुष्करिणि, क्यूशेड्, श्रीवारि मंदिर, अन्न प्रसाद भवन, धर्मशालाएँ, बस स्टैण्ड, उद्यानवन जिधर भी देखो भक्तजनों से पूरी तिरुमल भरी होती है।

इसी कारण, तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने, भक्तजन संदोह को दृष्टि में रखकर, निरंतर जगरूकता से, क्यूलइनों में, अन्नदान केन्द्रों में, वाहन सेवावों में... ऐसे कई जगहों पर, देवस्थान के पर्यवेक्षण में, उनके कर्मचारी, श्रीवारि सेवक, स्कौट्स, गाईड्स, पुलीस, होम्गार्ड, स्वास्थ्य विभाग... जैसे कितने ही लोग, भक्तों की सेवा करने के लिए तत्पर रहते हैं। फिरभी श्रीवारि दर्शन के लिए आनेवाले भक्त, सभी जगहों पर अपने आप सतर्क रहते हुए, बिना किसी जल्दबाजी के, क्रोधावेश का शिकार न होकर, क्यूलाइनों में अपनी बारी आनेतक संयमन का पालन करते हुए, देवस्थान से सहयोगी बनकर, शांति से अपनी तिरुमल यात्रा को संपूर्ण रूप से फलप्रद बनाएँ। इसी आकांक्षा से ''तिरुमल परंधाम् दस दिवसीय उत्सव'' के लिए बढ़िया स्वागत कर रही है हमारे(आपके) 'सप्तगिरि' पत्रिका!

ॐ नमो वेंकटेशाय

ॐ नमो नारायण!

- श्री के.रामनाथन

देवऋषि नारद भगवान नारायण के अनन्य भक्त हैं। वे सदा सर्वदा उनकी स्तुति करने वाले हैं। वे जहाँ भी जावे भगवान के नाम को कभी नहीं भूलते और यही कहते कि नमो नारायण, नमो नारायण। एक बार उनके मन में यह संदेह जाग उठा कि मैं तो सदा भगवान नारायण का नाम कहता रहता हूँ। असल में भगवान के उस नाम का क्या महत्व है? अपने मन में उठे इस संदेह को दूर करने के लिए वे सीधे अपने इष्टदेव नारायण के पास पहुँच गये और अपना संदेह प्रकट किया। उनकी बात सुनकर भगवान नारायण हँस पडे। यह देखकर देवऋषि ने सकुचाते हुए पूछा, ''भगवान आप मेरे मन में उठे संदेह को दूर किए बिना क्यों हँस रहे है? क्या ऐसा पूछना गलत है?''

देवऋषि की बात सुनकर भगवान नारायण ने कहा, ''नहीं, तुम्हारे ऐसे पूछने में कोई गलती नहीं। मैं इसलिए हँस पडा कि सदा-सर्वदा मेरा नाम लेने वाले तुमको अब तक इसके महत्व का ज्ञान नहीं है। खैर, यदि तुमको मेरे नाम का महत्व जानना है तो धरती में जाकर किसी क्षुद्र जीव के पास मेरा नाम सुनाओ।''

भगवान नारायण की बात मानकर देवऋषि धरती आ पहुँचे और वहाँ उन्होंने देखा कि कीचड़ में एक कीडा पडा है। वे उस क्षुद्र जीव के पास जाकर उसके कान में भगवान के नाम को दो बार सुनाया। अरे! क्या हुआ, वह कीडा नारायण का नाम सुनते ही मर गया। यह देखकर देवऋषि को बडा दुःख हुआ। वे चट से भगवान नारायण के पास गये और इस घटना के बारे में बताया।

देवऋषि की बात सुनकर भगवान ने मुसकुराया और उन्होंने कहा, ''चिंता मत करो नारद। अब उधर बगीचे में देखो, पौधे के रंगीन फूल पर एक सुन्दर तितली बैठ रही है। तुम सीधे उधर चलो और उस तितली के कानों में मेरा

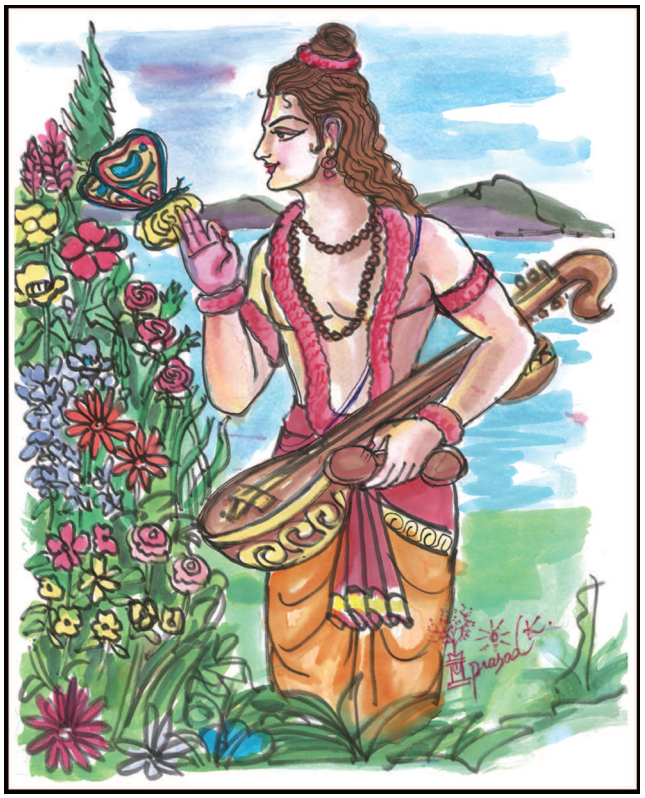

नाम सुनाओ।'' भगवान के कहे अनुसार देवऋषि उस तितली के पास आ पहुँचे और दो बार नारायण का नाम

सुनाया। अरे इतने में क्या हुआ! भगवान का नाम सुनते ही वह सुन्दर तितली भी मर गयी। यह देखकर नारद बडे उदास में वहीं बैठ गये। थोडे समय के बाद वे भगवान नारायण के पास गये और दुःख भरे स्वर में सारी बातें बतायी।

देवऋषि की बात सुनकर भगवान नारायण ने कहा, ''नारद उदास मत होओ। तुम तो मेरे नाम के महत्व को जानने का प्रयास में हो, इसलिए हिम्मत न हारो। अब तुम ऐसा करो, अब उधर देखो, एक मृगशावक तेज दौडता आ रहा है। तुम वहाँ जाकर उसके कान में मेरा नाम सुनाओ।'' भगवान की बात पर विश्वास करते हुए देवऋषि उस मृगशावक के पास जाकर भगवान का नाम सुनाया। अरे इस बार भी क्या हो गया। वह मृगशावक भी भगवान का नाम सुनते ही मर गया।

यह देखकर देवऋषि नारद एकदम डर गये। अब वे गहरी सोच में पड गये कि क्या भगवान का नाम सुनने पर जीव सब मर जायेंग? इस बार वे डरते डरते भगवान नारायण के पास गये और उस मृगशावक के साथ हुई घटना को बताया। उसका डर देखकर भगवान नारायण ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मेरे प्रिय देवऋषि! इसमें डरने की ऐसी क्या बात है? तुमको अब तक मेरे नाम के महत्व का ज्ञान नहीं हुआ है। तुम अब एक काम करो, उधर देखो, उस काली गाय के पास उसका बछडा खडा है। उसके पास जाकर मेरा नाम सुनाओ।''

भगवान की आज्ञा टालना नारद के लिए कठिन रहा। इसलिए वे उनके कहे अनुसार बछडे के निकट जाकर भगवान नारायण का नाम सुनाया। परंतु अब भी क्या हो गया। वह बछडा भी तत्क्षण मर गया। अब देवऋषि से रहा न गया, वे भयभीत होकर थर थर काँपने लगे। वे तेजी से भगवान नारायण के पास आ पहुँचे और उनसे मिलकर सारी बातें बतायी।

भगवान ने गौर से उनकी बातें सुनकर कहा, ''देवऋषि! अब तक तुमको मेरे नाम के महत्व का अच्छा परिचय नहीं मिला है। इसलिए बिना डरे और बिना मन हारे एक काम करो। राजमहल में आज महारानी को बच्चे का जन्म हुआ है। अब तुम वहाँ जाओ और उस बच्चे के पास जाकर मेरा नाम सुनाओ।'' देवऋषि नारद के मन में अब तो वहाँ जाने की हिम्मत नहीं उठी। फिर भी भगवान की आज्ञा को शिरोधार्य मानकर निकल पडे।

देवऋषि को राजमहल में पाकर राजा एक दम प्रसन्न हो उठे। उन्होंने बडी खुशी से उनका स्वागत किया और कहा, ''आपके आगमन पर राजमहल पवित्र हो गया है और मेरे बच्चे को भी आपसे आशीर्वाद पाने का स्वर्णिम मौका मिला है।'' राजा के वचन से देवऋषि के मन में खुशी के बदले डर की भावना बढने लगी। फिर भी वे स्वयं हिम्मत बंधाकर आगे बढे और पालने में सोते राजा के नवजात बच्चे के पास आकर भगवान नारायण का नाम सुनाया। अरे! अब तो वहाँ एक बडे आश्चर्य की घटना घटी।

पालने में सोता रहा वह बच्चा अब उठकर बैठ गया और वह बच्चा देवऋषि को देखकर बोलने लगा, ''देवऋषि! आपके महान कार्य के लिए लाखों धन्यवाद समर्पित करता हूँ।'' यह सुनकर देवऋषि गहरी सोच में पड गये। उनकी समझ में नहीं आया कि पालने में सोने वाला बच्चा उठ बैठा कैसे? वह उनके किस कार्य के लिए धन्यवाद दे रहा है? उनका सोचना देखकर उस बच्चे ने प्रश्न किया, ''देवऋषि क्या आपको अब तक भगवान नारायण के नाम की महिमा का महत्व मालूम नहीं हुआ।''

यह सुनकर नारदजी का आश्चर्य और भी बढ गया और कहा, ''वत्स! कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा है। तुम जरा विस्तार से बताओ।''

उनका कथन सुनकर बच्चा खुशी से कहने लगा, ''देवऋषि! मैं पहले एक कीडे के रूप में पैदा हुआ था, तब आपसे सुनाये गये श्रीमन्नारायण का नाम सुनकर एक तितली के रूप में जन्म पाया। फिर आपके द्वारा भगवान का नाम सुनकर मृगशावक का रूप पाया, फिर आगे बछडे के रूप में जन्म प्राप्त किया। वे सब भगवान नारायण के पवित्र नाम के सुनने मात्र से प्राप्त हुए थे। अंत में फिर आपसे भगवान का नाम सुनकर मुझे इस दुर्लभ एवं भाग्यपूर्ण मानव जीवन प्राप्त हुआ है। जिससे मैं भगवान को सदा अपने मन में सोच सकता, उनकी पूजा कर सकता और उनका गुण गा सकता हूँ। मेरे ऐसे भाग्यपूर्ण स्थिति के कारण आप ही हैं। इसलिए मैं आपको फिर एक बार लाखों धन्यवाद समर्पित करता हूँ।''

अब देवऋषि नारद साफ समझ गये कि भगवान नारायण के नाम का महत्व बडा एवं अतुलनीय है।

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरुपिणी।
विद्यारंभं करिष्यामि सिध्दिर्भवतुमेसदा।।

ज्ञानप्रदायिनी समझा जानेवाली माता सरस्वती के बारे में ऋग्वेद, देवी भागवत, ब्रह्मवैवर्त पुराण और पद्म पुराण आदि में विभिन्न गाथाएँ प्रचलित हैं। एक कथन के अनुसार ब्रह्म सृष्टिकर्ता होने के कारण सरस्वती भी उन्हींकी सृष्टि ही है और सृष्टि कार्य में साथ देने के लिए उन्हें अपनी जिह्वा पर धारण किया और एक कथन के अनुसार महादेवी ने सृष्टि कार्य में साथ देने के लिए सरस्वती का सृजन करके ब्रह्म को दी थी।

बुद्धि, विवेक, विद्या, कला, विज्ञान आदि के अधिधात्री के रूप में सरस्वती का पूजन किया जाता है। ज्यादातर सरस्वती हंसवाहिनी, वीणापाणी, पुस्तक धारिणी के रूप में चित्रित की जाती है। धवल वस्त्रों में सुशोभित माँ के विभिन्न नाम इस प्रकार है -

सरस्वती त्वियम दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी। हंसवाहसमायुक्ता विद्यादानकरी मम।।

प्रथमं भारतीनाम द्वितीयं च सरस्वती। तृतीयं शारदादेवी चतुर्थं हंसवाहनी।

पंचमं जगती ख्याता षष्टं वागीश्वरी तथा। कौमारी सप्तमं प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी।

नवमं बुद्धिधात्री च दशमं वरदायिनी। एकादशं क्षुद्रघंटा द्वादशं भुवनेश्वरी।

ब्राह्मी द्वादश नामानी त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः। सर्वसिद्धिकरी तस्य प्रसन्ना परमेश्वरी।

सा मे वसतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती।

पराशक्ति पहले पहल धारण किया पाँच रूपों में सरस्वती का रूप एक है। देवी भागवत के नवमस्कंध के पाँचवा अध्याय के अनुसार माता सरस्वती सिर्फ विद्यादायिनी ही नहीं भक्तों को सर्व शक्तियाँ प्रदान करनेवाली भी है। हमारे देश में शरत्ऋतु के आते ही ''शरन्नव रात्रियाँ'' के नाम से माँ भगवती की आराधना की जाती है। माना जाता है कि माँ दुर्गा महिषासुर नामक राक्षस से युद्ध करके अंत में उसका संहार किया। अधर्म पर धर्म का विजय के रूप में यह नौ दिन का त्योहार ''दशहरा'' नाम से भी जाना जाता है। दसवा दशमी का दिन विजयोल्लास में विजयदशमी के रूप में मनाते हैं।

नवरात्रियाँ-सरस्वती पूजा - दशहरे में करीब भारत के सभी जगहों पर माँ भगवती को हर दिन एक-एक नया रूप से अलंकृत करके पूजा करते हैं। लक्ष्मी, गायत्री, बाला, अन्नपूर्णा, ललिता आदि रूपों से अलंकृत करनेवाली माँ छठवाँ दिन सरस्वती के रूप में पूजा जाती है।

इस दिन ज्ञानदायिनी माँ सरस्वती धवल वस्त्रों से सुशोभित होकर स्वच्छ और पवित्रता का प्रतीक सफेद हंसवाहन पर सफेद मोतियों का हार पहनकर दर्शन देती है।

नवरात्रियों में महाशक्ति ने अपने सात्विक रूप महा सरस्वती का रूप धारण कर शुंभ और निशुंभ नामक राक्षसों का संहार की। इसीलिए नौ रात्रियों में छठे दिन सरस्वती की पूजा करने का रिवाज बन गया है।

शुंभासुर प्रमधिनी शुभदा च सर्वात्मिका।
रक्तबीज निहंत्री च चामुंडा चांबिका तथा।।

माना जाता है कि 'मूला' नक्षत्र माँ सरस्वती का जन्म नक्षत्र है। नौ रात्रियों में मूला नक्षत्र के दिन ही सरस्वती पूजा की जाती है।

भोग - स्वच्छता का प्रतीक माँ सरस्वती को भोग के रूप में 'शहद' को देते हैं। इस प्रकार प्रार्थना करते हैं।

मेधाम् विद्याम बल प्रज्ञाम संपदम् पुत्र पौत्रकाम।
देहिमे शारदे देवी स्मरामि मुख संस्थिताम।।

जय माता सरस्वती की

दुर्गा वैभव

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

न गायत्र्याः परं मन्त्रम् तथा सर्वेषामेव वेदानां गुह्योपनिषदां तथा। सारभूता तु गायत्री निर्गता ब्रह्मणो मुखात्। अथवा गायत्रीं यो न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः। से सिद्ध है कि वैदिक मन्त्रों में गायत्री मन्त्र का सर्वोच्च स्थान है। वेदानां माताऽमृतस्य नाभिः, गायत्री छन्दसां माता गायत्री सर्वाणि सवनानि वहति इत्यादि वेदोक्त वाक्यों से गायत्री को वेदमाता कहा गया है। याज्ञवल्क्यस्मृति में तो यहाँ तक कहा गया है कि गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी। गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्। इसी तरह भगवद्गीता में भगवान स्पष्ट ही कहे हैं किस गायत्री छन्दसामहम् अर्थात् वेदों में मैं गायत्री हूँ। ब्रह्महत्या आदि के प्रायश्चित्त में भी गायत्री जप की ही प्रधानता सिद्ध है अन्य किसी मन्त्रों की इतनी महिमा नहीं। वही गायत्री लोककल्याण के लिए, धर्म संरक्षण के लिए, दुष्ट राक्षस संहार के लिए विविधरूपों को लेते हैं वही रूप है - दुर्गादेवी!!

हेतुः समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः
नज्ञायसे हरिहरादि भिरप्यपारा!
सर्वाश्रयाखिल मिदं जगदंशभूतं
अव्याकृताहि परमा प्रकृतिः त्वमाद्या!!

समस्त जगत को दुर्गादेवी आधारभूता है। परम प्रसन्नभाव से सभी जनों को पालनपोषण करता है। महामाया लोकस्वरूपिणी है। विश्वमाया रूप धारण करके मानव को मोहबन्धों में बन्धन कराती है। पुनः माँ दयाभाव से हमें मोहबन्धों से मुक्त भी कराती है। संसार और मुक्ति दोनों माँ की अधीन है। समस्त सृष्टि योगमाया की विलास से ही होता है। सृष्टिकर्त्री माँ भी जगत्कल्याण केलिए विविध रूपों में प्रकट होता है। एकबार राक्षसों से पीडित देवगण त्रिमूर्तियों से रक्षण के लिए प्रार्थना करते हैं। त्रिमूर्ति कोपावेश से ज्वलन होने से उन्हे मुख से एक महाज्योति निकालती है। वही ज्योति कांतिराशि में परिणाम होकर एक स्त्रीमूर्ति का रूप होता है। शिव के मुखकान्ति से मुख, यम के कान्ति से केश, विष्णु के कांति से भुज, चंद्र कांति से स्तन, इन्द्र कांति से कटि, ब्रह्म कांति से चरण, सूर्यकांति से पादांगुली, कुबेर कांति से नाक, अग्नि कांति से त्रिनेत्र, प्रजापति तेज से दंत, वायु से कर्ण, सन्ध्याकांति से भ्रूका निर्माण हो गया। वही माँ देवकार्य करने के लिए चिदग्निकुंड से उत्पन्न हो गया।

चिदग्निकुंड सम्भूता देवकार्य समुद्यता। देवगण संतुष्ट होकर अपने अभीष्टसिद्धि के लिए माँ दुर्गा की स्तुति किया।

स्तुस्ता सुरैः पूर्वं अभीष्ट संश्रयात्
तथा सुरेन्द्रेण दिवेषु सेविता!
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राणि अभिहन्तु चापदः!!

जगत के महाराज्ञी दुर्गादेवी है। देवासुरगण भी माँ दुर्गा की लीला विभूति है। सृष्टिचक्र में देवासुर परस्पर विरुद्ध

शक्तियाँ है। जैसे लोक में ज्योति और अंधकार दोनों एक से ही रहता है। देवगण निवृत्ति मार्ग में प्रयाण करते हैं। असुरगण प्रवृत्ति मार्ग में चलते हैं। यही धर्माधर्मसंग्राम माँ दुर्गा की लीला विभूति से ही होता है। सृष्टि धर्म भी हैं।

अजोपिसन् अव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वां अधिष्ठाय सम्भवामि आत्ममायया।।

माँ दुर्गा की सहायता से विष्णु भगवान लोक निर्वहण करता है। समस्त वस्तु को भोग करके अंत में माँ लीन करती है। मायाशक्ति एकी है। मायाशक्ति समस्त विश्व में रहती है। माया प्रकृती है। मायावी महेश्वर है। दोनों मिलकर अर्थनारीश्वर रूप में सृष्टि कार्य करते हैं।

मायांतु प्रकृतिं विद्यात् माथिनं तु महेश्वरं
तस्यावय भूतैस्तु व्याप्य सर्वमिदं जगत्।।

सर्वव्यापिनी दुर्गा दुष्ट नाशिनी है। शिष्ट रक्षिणी है। इसलिए देवगण एकबार हिमवान के समीप जाकर उसके पुत्री विष्णुमाया से शुम्भनिशुम्भ संहार के लिए स्तुति किया। यहाँ विष्णुमाया गौरी नाम धारण किया। गौरी स्नान करने के लिए चलने के समय में उसी से कौशिकी का जन्म हुआ। तभी माँ काल के वर्ण में रूपांतर हुआ इसलिए 'कालिका' नाम प्रसिद्धि हुआ। शुम्भनिशुम्भ चण्डमुण्ड राजा को त्रिजगन्मोहनाकार कौशिकी की वर्णन किया। चण्डमुण्ड कौशिकी को विवाह करने के लिए सुग्रीव को भेज दिया। माँ युद्ध में अपनी से विजय प्राप्त करने के लिए कहा। कौशिकी कालिका रूप में शुम्भनिशुम्भ को संहार किया। युद्ध में माँ की देह से चंडिका की जन्म हुआ। कालि माता रक्तबीज नामक असुर को भी संहार किया। युद्ध में सप्तमातृका, शिवदूती रूपों की आविर्भाव हुआ। राक्षस संहार के बाद माँ में लीन हो गया।

एकैवाहं जगत् द्वितीया का ममापरा।
पश्य एता दुष्ट! मय्येव विशत्योमद्विभूतयः।।

सभी देवताओं में अंतर्लीन शक्ति माँ एकी है। सृष्टि निर्माण, पोषण और संहार के लिए एक ही शक्ति विविध नाम रूप धारण करती है। चराचरजगत शक्तिमय है। शक्ति के लिए रूप नही है। जगन्माता में रहनेवाली शक्तिचतुष्टय भी दुर्गादेवी है। जिस माता को हम मातृमूर्ति के रूप में आराधना करेंगें। वे चैतन्य शक्ति है और समस्त विश्वसंरक्षकी है। माँ बहुमुखधारिणी है। जगन्माता चैतन्य तीन रूपों में विभक्त होती है। आदि स्वरूप है महाशक्ति द्वितीयरूप है महेश्वरि और तृतीय रूप है महालक्ष्मी। समस्त इप्सित प्रदायिनी महालक्ष्मी स्वरूप है। आद्याशक्ति अपने में लीन परतत्व से क्षराक्षरपुरुष सृजन करके जगत में प्रवेश कराते हैं। ब्रह्म से चार वेद उद्भव होगया। वेदविद्या की अधिष्ठात्री सरस्वती है। वेदमाता शब्दस्वरूपिणी है। प्रपञ्च में रहनेवाली सभी विद्याये माँ के अधीन में रहते हैं।

विद्याः समस्ता स्तवदेवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वया 'एकया' पूरितं अम्बया एतत्
काते स्तुति स्तव्य परा परोक्तिः।

सकल जगत में स्थित स्त्रियाँ माँ की प्रतिमूर्तियाँ है। सभी जनों में बुद्धि रूप में हृदय में स्थित नारायणी स्वरूप की वंदन है।

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवी! नारायणि नमोस्तुते।।

एकाग्र एकत्व चिंतन से हमारे हृदय में स्थित मातृमूर्ति को भजन करने से स्वर्ग मिलता है। ललितासहस्रनाम में भी-

'चैतन्यार्घ्य समाराद्या चैतन्यकुसुमप्रिया' स्तुति किया गया है। एकबार मार्कण्डेय ब्रह्म से कहा- पितामह! जो इस संसार में परमगोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है और जो अब तक आपने दूसरे किसी के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये। ब्रह्माजी बोले - ब्रह्मन्! ऐसा साधन तो एक देवी का कवच ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने उसे श्रवण करो।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।
पञ्चमं स्कंधमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्री च महागौरीति चाष्टमम्।
नवम् सिद्धिदात्री प्रोक्ता नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।

उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना!! देवी के नौ रूप हैं जिन्हे 'नवदुर्गा' कहते हैं। प्रथमरूप शैलीपुत्री है। दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथा कूष्माण्डा है। पाँचवी दुर्गा का नाम स्कन्धमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते है। सातवाँ कालरात्रि आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवी दुर्गा का नाम सिद्धि दात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं। जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवी का स्मरण किया है। उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करती हो। चामुण्डा देवी प्रेत पर आरूढ होती है। वाराही भैंस की सवारी करती है। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड़ पर आसन जमाती हैं। माहेश्वरी वृषभपर आरूढ होती हैं। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मी देवी कमल के आसन पर विराजमान है और हाथों में कमल धारण किये हुए हैं। वृषभ पर आरूढ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई है और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं।

इत्येता मातरः सर्वाः
सर्वयोग समन्विताः
नानाभरणशोभाढया
नानारत्नोपशोभिताः।

इस प्रकार ये सभी माताएँ सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न है। इसके सिवा और भी बहुत सी देवियाँ हैं। जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नानाप्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं।

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः
शंख चक्रं गदा शक्तिं हलं च मुसलायुधम्।
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ंगमायुधमुत्तमम्।
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै।

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोध में भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा केलिए रथ पर बैठी दिखायी देती है। शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मूसल खेटक और तोमर, परशु तथा पाश कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शारंग धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथों में धारण करती हैं। दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभयदान देना और देवताओं का कल्याण करना - यही उनके शस्त्र धारण का उद्देश्य है।

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महात्साहे महाभयविनाशिनि।।

महान रौद्ररूप अत्यन्त घोर पराक्रम महान बल और महान उत्साह वाली देवी! तुम महान भय का नाश करने वाली हो, तुम्हे नमस्कार है। जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फंस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमंगल नही होता।

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।

ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।

युद्ध के समय, संकट में पड़ने पर भी उनके अपर कोई विपत्ति नहीं दिखायी देती। उन्हे शोक, दुःख और भय की प्राप्ति नहीं होती।

अगम्यगोचरी, आत्मास्वरूपिणी, सर्वकारणकारिणी
ज्ञानस्वरूपिणी, कृष्णस्वरूपिणी, मात्रे नमः।

कठोपनिषद में माँ दुर्गा की स्तुति इस प्रकार कहा है -

''उत्तिष्ठत! जाग्रत! प्राप्य वरान् निबोधत क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथः तत् कवयो वदन्ति''

दुर्गम मार्ग को भी माँ की अनुग्रह से पार करने से 'दुर्गा' नाम से माँ ख्यात है। सागर में, वन में, संसार में, मोह में बंध नर को तीरपर आने का मार्ग माँ दर्शित कराती है। इसलिए दुर्गा नाम से ख्यात है।

दुर्गात् तारयसे दुर्गे तत्वं दुर्गा स्मृता जनैः!
कान्तारेष्ववसन्नानां मग्नानां च महार्णवे!!

भवसागर से दुर्गा देवी मुक्ति देती है। आत्मज्ञान देकर अंधकार विनाश करती है। रक्षा रूप, गंध शब्द और स्पर्शादि विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा सदा करे तथा सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करे। वाराही आयु की रक्षा करती है। वैष्णवी धर्म की रक्षा करती है। चक्रिणी यश कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करती है। चण्डिका पशुओं की रक्षा करती है। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करती है। विजया देवी सम्पूर्ण भयों से रक्षा करती है।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्ग क्षेमकरी तथा!
राजद्वारे महालक्ष्मी विजया सर्वतःस्थिता!!

देवी का स्तोत्र और पूजा से सम्पूर्ण व्याधियाँ नष्ट हो जाती है। सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। सुन्दर दिव्य दुर्गा देवी की पूजा से नित्य परमपद प्राप्त होता है।

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते!!

भागवत कथा सागर

पृथु महाराज का भगवान के धाम में जाना

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवांघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी

एक बार पृथु महाराज ने एक यज्ञ किया और उसमें अनेक ऋषियों, ब्राह्मणों, देवताओं तथा राजर्षियों ने भाग लिया था। पृथु ने पूजनीय अतिथियों का सर्वप्रथम सत्कार किया। इसके दौरान राजा ऐसा लग रहा था मानो वह तारकों के मध्य स्थित चंद्रमा हो। इस यज्ञ की परिपूर्ति के उपरांत, अपने पास के निधि का इंद्रियलोग के लिए प्रयोग न कर, उसका सदुपयोग करते हुए अनासक्त गेही बनकर अपना शासन चला रहा था।

मुक्तावस्था में स्थिर रहकर महाराज ने अपनी धर्मपत्नी अर्ची के साथ दांपत्य जीवन बिताया तथा पाँच पुत्रों को प्राप्त किया जिनके नाम हैं - विजिताश्व, धूम्रकेश, हर्यक्ष, द्रविण, वृक। पृथु महाभक्त था और इसलिए समस्त प्रजा की रक्षा करके भगवान की सृष्टि की रक्षा करने लगा। पृथु की आज्ञा का उल्लंघन माने आग से खिलवाड़ करने के समान था। पृथु, अपनी वीरता के कारण पृथ्वी पर इंद्र जैसा दुर्जेय दिखाई दे रहा था। धरित्री जैसी सब्रता रखते हुए, अपनी प्रजा की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करते हुए स्वर्गाधिपति के समान रहता था। वृक्ष की भांति समस्त प्रजा की इच्छाओं की पूर्ति करता रहा। महासमुद्र की थाह का पता लगाना असंभव है, उसी रूप में इस महाराज की मन की गहराई की थाह लगावा भी असंभव ही है। वह मेरुपर्वत समान स्थिर, अचल रहकर अपने प्रयोजन की यश बढ़ाता गया। उसकी बुद्धि एवं विद्या यमधर्मराज से मिलता-जुलता था। उसका ऐश्वर्य मणियों-धातुओं से युक्त हिमालय पर्वत से समता रखती है। उसकी संपदा कुबेर की संपदा के समान था तथा

उसका सौंदर्य, मन्मथ से समरूपता रखती थी। चिन्तन में वह सिंह था, राग में वह स्वायंभुव तथा नियंत्रण रखने में ब्रह्म के समान था। इस प्रकार उसका यश समस्त लोकों में फैल गया था। उस राजा के ऐश्वर्य का यश, श्रीरामचंद्र के यश की भांति अतिमधुर बनकर नर-नारी को आनंद प्रदान करने लगा।

शासन के दौरान जब पृथु ने यह अनुभव किया कि वह बुढ़ापे की ओर अग्रसर हो रहा था। तब तपस्या करने के लिए सती समेत जंगल में चल गया। अपनी पुत्री धरणी को उसने अपने पुत्रों को सौंप दिया। गृहस्थाश्रम से मुक्त पृथु ने कठोर तपस्या करना प्रारंभ किया। थोड़े समय के लिए पृथु ने कंद-मूल-फल को खाया। चंद समय के लिए फल एवं सूखे पत्तों को खाया। कुछेक हफ़्तों के लिए केवल जल का पान किया। उसके बाद केवल वायुभक्षण करके ही अपना जीवन बिताने लगा। अरण्यवास के नियमों का पालन करते

हुए तथा ऋषियों का अनुगमन करते हुए, ग्रीष्म ऋतु में पंचाग्नि के मध्य तपस्या करते रहे। फलतः उन्होंने अपने सारे इंद्रियों पर काबू पाया। श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने के लिए पृथु ने यह सब कुछ किया। इसके उपरांत जब उसे देहत्याग करने का अहसास हुआ, तब उसने श्रीकृष्ण पर ही सारा ध्यान लगाया। देहत्याग करने के लिए उन्होंने एक विशेष आसन मारकर गुह्यांग से जीवाधार प्राण शक्ति को नाभीचक्र, हृदय, कंठ से ऊपर उठाकर भ्रूमध्य तक पहुँचाया। धीरे-धीरे इसको ब्रह्मरंध तक पहुँचाया। बाद में जीवाधार को वायु में, शरीर को पृथ्वी में तथा देहाग्नि को अग्नि में मिला दिया। अंततोगत्वा मिथ्याहंकार को महत्त्व में विलीन करके आध्यात्मिक बल पर पृथु मुक्त हुआ।

पृथु की पत्नी अर्चि ने भी पति के समान तपस्या की थी। स्वाभाविक ही बहुत कोमल रहनेवाली वह रानी कठोर अरण्यवास को अपनाया। जमीन पर ही लेटकर, पत्तों को ही खाने लगी। पति की भांति वह भी अपना जीवन निर्वेद में बिताने लगी। जब पृथु का देहांत हुआ, तब अर्चि ने उन्हीं पहाड़ों पर चिता को बनाकर उस पर पति के मृतदेह को रखा। उसके उपरांत कर्मकांड़ीय आचारों का निर्वाह पूरा करके, निकट के नदी में स्नान करके, भगवान की प्रार्थना करके, चिता की प्रदक्षिणा कर, पति के चरणों को नमस्कार करने के बाद अर्चि पति के लिए बनाये चिता में वह प्रवेश कर गई। इस कार्य को देखकर असंख्य देवतापत्नियों ने अपने पतियों के संग अर्चि को प्रोत्साहन दिया। देवतागण ने पुष्पवृष्टि करके आपस में ऐसा कहने लगे -

'महारानी अर्चि बड़ी सौभाग्यशाली स्त्री है। जिस भांति श्रीमहाविष्णु की सेवा लक्ष्मी करती है, उसी भांति अर्चि ने भी पृथु की सेवा की। हे देवतागण! उस पतिव्रता की ओर देखिए, कितनी ही पुण्य औरत है वह। भौतिक जीवन बहुत छोटा होता है। भक्तिभाव में हर समय निमग्न रहने वाले निश्चित रूप से भगवान में शरण पायेंगे। उनके लिए दुर्लभ जैसी चीज नहीं होती है।'

सुरपत्नियाँ आपस में चर्चा कर ही रही थी कि, इस दौरान अर्चि अपने पति के साथ एकाकार प्राप्त कर गई। राजा पृथु के इस महान जीवन का वर्णन श्रीमद्भागवतम् के चतुर्थ सर्ग में मैत्रेय ने विदुर के साथ की। पृथु के इस महान जीवनगाथा अलभ्य फल को सुलभ कर देती है। कृपया इसे श्रद्धापूर्वक सुनिए -

पृथु महाराज के सद्गुणों को जो बडी श्रद्धा तथा निश्चल मन से वर्णन करता है, पठन करता है, सुनता है तथा सुनवाता है, उसे वैकुंठ की प्राप्ति होती है। पृथु की गाथा सुननेवाला ब्राह्मण पूर्ण, ब्राह्मत्व को प्राप्त करता है, क्षत्रिय विश्व में चक्रवर्ती बनता है, वैश्य अपने सहवैश्यों में श्रेष्ठ तथा पशुओं का स्वामी बनता है। शूद्र, श्रेष्ठ भक्त बनता है। पृथु की चारित्रिक विशिष्टता का श्रवण जो भी बंजर करती है, वह संतानवती बन जाती है, दरिद्र व्यक्ति धनवान बन जाता है, सुननेवाला आदमी समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करता है, मूर्ख व्यक्ति विवेकवान तथा पंडित बन जाता है, समस्त अमंगल दूर हो जाते हैं। पृथु गाथा के श्रवण से आदमी की संपदा बढ़ जाती है, आयुर्वृद्धि होती है, स्वर्ग को प्राप्त करता है, तथा कलि या मल या पापों से दूर हो जाता है। श्रोता, धर्मार्थकाममोक्ष का अधिकारी बनता है। जो भी जीवन में अपनी कामना की पूर्ति चाहता है, तो उसको निश्चित रूप से पृथु के विशिष्ट जीवन पर आरूढ़ होने से पूर्व पृथु के जीवन का स्मरण करता हो, तो उसके परिणामस्वरूप सभी सामंत राजा अयाचित ही शुल्क को भर देते हैं। कृष्ण भक्ति से ओत-प्रोत जो भी शुद्ध भक्त होते हैं, उनको भी पृथु के गाथा का श्रवण, पठन तथा पाठन करवाना होता है। ऐसा करने पर वह भक्त वैकुंठ को निश्चित रूप से प्राप्त करता है। जो भक्त नित्यप्रति इस गाथा का पठन करता है, यशोगान करता है, वर्णन करता है, वह भक्त भवबंधनों को तरनेवाले भगवान के पादपद्म में अकुंठित, दृढ़ विश्वास तथा श्रद्धा को प्राप्त करता है।

बालाजी श्रीवेंकटेश भगवान की सेवा में महन्त

- डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्युलु

कलौ वेंकटनायकः'' - इस सूक्ति के अनुसार कलियुग में भक्तों के रक्षक एवं धर्म संरक्षक बालाजी श्रीवेंकटेश भगवान ही हैं। कृतयुग में नरसिंह भगवान त्रेतायुग में श्रीरामचंद्र, द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण एवं कलियुग में श्रीनिवास यानी बालाजी भगवान श्रीवेंकटेश अरि दमन एवं भक्तों के उद्धार करनेवाले के रूप में बताये गये हैं।

श्रीवेंकटाद्रि निलयः कमला कामुकः पुमान्।
अभंगुर विभूतिर्नः तरंगा यतु मंगलम्।।

श्रीवेंकटाद्रि पर विराजमान भगवती कमला माता के पतिदेव हमें स्थायी व शाश्वत सम्पत्तियाँ प्रदान करके हमारा हित करेंगे।

युग-युगों से बालाजी की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित करके, विविध सेवायें प्रदान करनेवालों में 'महन्तों' का विशिष्ट स्थान है। महन्तों की सेवायें बहुमूल्य एवं अतुलनीय हैं।

'महन्त' नामक शब्द से तात्पर्य : देवालयों - मन्दिरों का कार्यनिर्वाहक 'सन्यासी' है। इस शब्द की उत्पत्ति ''महन्तः'' नामक शब्द से हुई है। 'मठ' के पर्यवेक्षक एवं निर्वाहक के अर्थ में भी इस शब्द का प्रयोग होता है। सन् १८४३ ई. से १९३३ तक 'तिरुमल' में महन्तों का प्रशासन चला। इनके शासनकाल में तिरुमल एवं तिरुचानूर के यश का बहुत प्रसार हुआ। मन्दिरों में सुशासन था। इसके कारण महन्तों एवं उन दोनों प्रान्तों की श्रीवृद्धि हुई।

सन् ७-८ ई. सदियों से अठारहवीं सदी के अन्त तक के कालखण्ड में विभिन्न राजा-महाराजाओं ने भगवान बालाजी की विविध प्रकार की सेवायें की। अठारहवीं सदी के उपरान्त भारत में अंग्रेजों ने पदार्पण किया एवं मन्दिर उनके अधीन चला गया। परिणामस्वरूप मन्दिरों के निर्वहण पर प्रश्न चिह्न लग गया। न नियमित रूप से पूजा-अर्चना होती थी, और नही भोग लगाया जाता था। इन लोगों को मन्दिर द्वारा प्राप्त होनेवाली आमदनी पर ही श्रद्धा एवं रुचि थी न कि मन्दिर निर्वहण पर। सन् १८०१ ई. तक अंग्रेजों का ही बोल बाला था।

कोई भी उनसे प्रश्न करने का दुस्साहस न कर पाते थे। सम्पूर्ण दक्षिण भारत पर 'मद्रास प्रेसिडेन्सी' का ही दब दबा था। चूँकि इनका केन्द्र चेन्नै (मद्रास) था, इसलिए मन्दिर से प्राप्त होनेवाला आय मद्रास के कोशागार में जमा किया जाता था। उत्तर आर्काट जिलाधीश का इस पर प्रभुत्व था। ऐसी स्थिति में उस समय के स्थानीय राज्य यानी मैसूर, कालहस्ती, वेंकटगिरि इत्यादि के शासकों ने खूब चर्चा-परिचर्चा करके अन्त में तिरुमल पर ही रहनेवाले महन्तों के पक्ष में अपना निर्णय सुनाया था। उन्होंने सोचा कि यदि मन्दिर का निर्वहण दायित्व महन्तों को सौंपे, तो मन्दिर का वैभव बढ़ेगा एवं व्याप्त होगा। कारण तब तक तिरुमल पर महन्त जो हिन्दी भाषा-भाषी थे- आकर बस गये एवं पूजा-अर्चना एवं प्रशासन का कार्य, सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए प्रसिद्ध हुए। तदनुसार संबंधित

कानून बना, नियम-उपनियम तैयार किये गये। फिर १८४२-४३ के बीच के काल में तिरुमल मन्दिर के साथ-साथ तिरुपति में स्थित श्री गोविन्दराजस्वामी, श्री कोदण्डरामस्वामी एवं श्री कपिलेश्वरस्वामी के मन्दिरों सहित तिरुचानूर माता पद्मावती के मन्दिरों को भी हथीरामजी मठ को सौंप दिया गया। यहाँ तक कि उनके बाद मन्दिर निर्वहण का दायित्व उनके उत्तराधिकारी महन्तों को भी सौंपने का आदेश जारी किया। यह घटना २१-४-१८४३ को हुई थी। इस समय तक आते-आते मन्दिर निर्वहण व्यय छोड़कर अंग्रेज सरकार ४० लाख रूपये की निवल आय प्राप्त करती थी। उन्होंने भले ही निर्वहण-दायित्व महन्तों को सौंपा था, परन्तु मन्दिर चलाने हेतु एक पैसा भी नहीं दिया था। देवस्थान का खाली कोशागार महन्त को सौंप दिया गया था।

बिना धन के मन्दिर का निर्वहण महन्त के लिए कठिन सिद्ध हुआ। नेल्लूरु निवासी ए.एस.कृष्णाराव वकील ने मद्रास (चेन्नै) की विधान सभा में यह बात अनेक बार उठायी थी। सरकार ने कुछ न कुछ बहाना बताते-बताते विलंब तो किया था परन्तु विवश होकर कुछ राशि दी। केवल रु.५,०००/- महन्त को देकर अपना पल्लू झाड़ लिया। इस प्रकार मन्दिर आर्थिक संकटों का शिकर हो गयी।

अब हम कुछ ऐसे सुप्रसिद्ध व ख्याति प्राप्त महन्तों के बारे में जान लेंगे जिन्होंने मन्दिर की उन्नति एवं दूर-दराज से आनेवाले भक्तों के हित में अनेक कदम उठाये।

१.महन्त श्री सेवादास

महन्त श्री सेवादास स्वनाम धन्य एवं बड़े भाग्यशाली भक्त थे। सरकार द्वारा प्राप्त केवल रु.५,०००/- की राशि से बालाजी भगवान के तिरुमल मन्दिर के निर्वहण का कार्यभार संभाला। इनका पदनाम ''पूछताछ अधिकारी'' यानी मन्दिर का कार्यकारी अधिकारी था। सेवादासजी के समय से मन्दिर आनेवाले श्राद्धालुओं की संख्या बढ़ी एवं मन्दिर की आमदनी में भी वृद्धि हुई। इसको देखकर सेवादासजी ने विविध सेवाओं को नियमित रूप से प्रारंभ किया था। उन्होंने मूलविराट मूर्ति की सजावट के लिए स्वर्ण-पीताम्बर, स्वर्ण यज्ञोपवीत (जनेऊ), स्वर्णपद्मपीठ, मोतियों के कर्णाभूषण, बाहुओं के लिये नागाभरण इत्यादि की व्यवस्था की एवं भगवान की अनुकम्पा प्राप्त की। इनके अतिरिक्त सेवादासजी ने भगवान की उत्सवमूर्ति (शोभायात्रा के दौरान जिस मूर्ति का उपयोग करते हैं।) के श्रृंगार के लिए, मुक्ता-मुकुट, हाथ-पैरों में चढ़ाने के लिए रजत-पहनाव जिन में मोती जड़े थे, इत्यादि बनवाकर भगवान की शोभा बढ़ायी। साथ-साथ बालाजी की पटरानियों के लिये भी हीरे-मोतियों से युक्त वेणियाँ बनवायीं। गर्भगृह की देहरी पर जिसे 'कुलशेखरपडि' कहते हैं- कढ़ाव युक्त रजत फलक का आवरक बनाया था। उत्सव (चल) मूर्तियों के लिए बनी सेज़ पर (बिछौना) सिंहमुखवाले कंगन युक्त रजत आरून, झूले केलिए आवश्यक चाँदी के चार साँकलों (जंज़ीर) की व्यवस्था की थी। मुक्कोटि (तीनकरोड़) परिक्रमा का मार्ग सरल बनाया था। उत्सव (चल) मूर्तियों के लिए वज्रकवच बनवाये तथा यह नियम भी बनाया कि वैकुंठ एकादशी के दिन भगवान की शोभायात्रा हेतु निकलेंगे तब इन्हें पहनाना होगा। कालान्तर में यह शोभायात्रा स्थगित कर दी गयी। परन्तु स्वामी के दर्शनार्थ जानेवाले श्रद्धालुओं के लिए पवित्र डुबकियाँ लगाने हेतु स्वामिपुष्करिणी सरोवर की हि आवश्यक मरम्मतें करवायीं। मन्दिर की पश्चिम

दिशा की तरफ स्थित प्राचीन सरोवर से (यह महाराज अच्युत रायलु के नाम पर विख्यात है।) अंतर-नालों द्वारा स्वामिपुष्करिणी में जल के आने की भी व्यवस्था इसी महन्त की देखरेख में हुई। ''जलकेलि मंडपोत्सव का इनकी निगरानी में ही पुनःप्रारम्भ किया गया। सेवादासजी ने ही उत्सवसेवाओं के लिए आवश्यक शेषवाहन एवं बृहत-रथ बनवाये। तिरुपति में स्थित श्री गोविंदराजस्वामी मन्दिर एवं तिरुचानूर मन्दिर का इन्होंने ही पुनरुद्धार (नवीकरण) किया था। श्री गोविंदराजस्वामी के आलय प्रधान गोपुर की दक्षिण दिशा में इन्होंने ही कुछ मरम्मत करायी। तिरुचानूर में तो मन्दिर के मुख मण्डप निर्माण के अतिरिक्त इन्होंने माता पद्मावती के दोनों हाथों के लिए चाँद के आभरण भी बनवाये थे।

श्री सेवादास महन्त की न्यासिता सन् १८६४ ई. तक चली। १८४३ से १८६४ ई. तक भगवान के लिए उपेक्षित अनेक सेवाकार्यक्रम बिना रुकावट के आयोजित किये गये।

२. महन्त धर्मदास

महन्त धर्मदास, महन्त सेवादासजी के शिष्य थे। सन् १८६४ ई. से सन् १८८० तक ये मन्दिर के कार्यकारी अधिकारी

के रूप में कार्यरत थे। प्रारंभ में इनका ध्यान भी भगवान की मूलविराट मूर्ति के आभूषणों पर, परमपावन गर्भ मन्दिर के श्रृंगार की ओर आकर्षित हुआ। धीरे-धीरे मन्दिर की आमदनी में वृद्धि हुई। भक्त भी बड़ी-संख्या में आने-लगे। श्री धर्मदास द्वारा निम्नलिखित स्वर्ण आभूषण बनवाये गये थे-

१. मूलविराट मूर्ति को स्वर्ण मुकुट

२. कर व चरणों के लिए स्वर्ण आभरण

३. दो स्वर्ण मालायें

४. वज्र जडित मकर कंठि (हार)

५. मुकुट के बीच जड़ने के लिए हथेली के समान नवरत्न पथक

६. स्वर्णिम द्वार

७. द्वार पर तांबे का आभरण जिस पर स्वर्ण का महरम एवं उत्सवमूर्ति मलयप्पा के लिए बहुमूल्यवान कलिकितुरायि (विशेष प्रकार का आभूषण)

राघोजी भोन्सले नामक एक मराठा भक्त ने इनके लिए आवश्यक आभूषणों की भेंट की थी।

(क्रमशः)

अखंड ब्रह्मोत्सव सेवा में अष्टदिक्पालक

तेलुगु मूल - श्री एम.वी.रमण

हिन्दी अनुवाद - डॉ.बी.के.माधवी

पद्मपुराण में बताये गये हैं कि- पूर्व कलियुग के आरंभ में जंबूद्वीप में स्थित भारत देश में गंगानदी की दक्षिण दिशा में दो सौ योजनों के दूर पर, पूरब के समुंदर के पश्चिम दिशा में पाँच योजनों के दूर में, नारायण पर्वत पर स्वामिपुष्करिणी तट के पश्चिम दिशा में कन्याभाद्रपद मास एकादशी सोमवार श्रवणानक्षत्र युक्त सिद्धयोग के शुभमुहूर्त में देवता समूह के द्वारा प्रार्थित करके, लोकरक्षक, परमपुरुष श्रीनिवास भगवान अवतरित हुए हैं।

ऐसे अवतरित स्वामी को ब्रह्मादिदेवतागण सब दर्शन किये थे। उस समय में स्वामी को उत्सव वैभव के साथ मनाने के लिए सोचा था। स्वामीजी ने इसकी स्वीकृति दी। इस संदर्भ में ब्रह्म ने नौ दिनों के उत्सवों का प्रबंध करके इसमें वाहन सोवाओं में स्वामी को जुलूस निकालने की तैयारी की है। इसमें पहले-पहल ध्वजारोहण कार्यक्रम में ब्रह्म ने गरुडध्वज पट लहराकर उत्सवों के आह्वान के रूप में सारे देवतागणों को भेजने का प्रबंध किया है। इसमें प्रमुख रूप से सारे इंद्रादि दिक्पालकों का आह्वान किया गया हैं। ये सब अष्टदिक्पालकों के रूप में प्रख्यात हैं।

वे सब ब्रह्मोत्सवों में भाग लेकर तिरुमाडवीथियों के आठ दिशाओं में रहकर स्वामी को ब्रह्मोत्सव वाहनों की सेवाओं के संदर्भ में, स्वामी तिरुमाडवीथियों में जुलूस निकालते समय, स्वामी को दूसरों के बुरे नजर नहीं लगाने के जैसे, दुष्टशक्तियों के आवहन को रोकते हुए, सारे ब्रह्मोत्सव अत्यंत दिग्विजय के रूप में होने में प्रमुख पात्र का पोषण निभाए हैं। उस समय में ब्रह्मदेव ने कुबेर के द्वारा समर्पित दिव्याभरणों का ही अलंकरण किया है।

ऐसे ब्रह्मोत्सवों में अत्यंत प्रातिनिध्य का भार वहन करनेवाले वे अष्टदिक्पालक कौन हैं? उनकी विशेषताएँ क्या है? इन ब्रह्मोत्सवों के संदर्भ में जानेंगे...

पूरब, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ये चार दिशाएँ हैं। आग्नेय, नैरुति, वायुव्य, ईशान्य ये चार कोने या चार विदिशाएँ हैं। इन आठों को मिलाकर अष्ठदिशाएँ कहते हैं। इन आठ दिशाओं के पालकों से संबंधित विशेषताओं के बारे में जानेंगे।

अष्टदिक्पालकों का वृत्तांत

१) इंद्रदेव : वेदों में इंद्र को देवताओं के राजा के रूप में कीर्तित किया गया है। यह पूरब दिशा के अधिपति है। यह अदिति का पुत्र है। इनकी पत्नी शचीदेवी है। इनका आयुध वज्र है। वाहन ऐरावत है। इनका निवास अमरावति पट्टण है। क्षीरसागर से आविर्भूत ऐरावत नामक हाथी को, उच्छैश्रव नामक घोडे को इन्होंने अपना लिया है। देवासुर संग्राम के समय में राक्षसों को हराकर, देवताओं के जीतने पर देवताओं ने इस यह विजय को अपने ही महानता मान ली हैं। उस समय उनको शून्य प्रदेश में परब्रह्म देदीप्यमान से दिखाई दिया। उस तेज प्रताप को देखकर आश्चर्य होकर देवताओं ने उस रूप को जानने का प्रयत्न किये हैं। उनमें पहले अग्नि बाद में वायु जाकर उस शक्तिस्वरूप के बारे में जानने में असफल होकर वापस आगये हैं। बाद में इंद्र ने

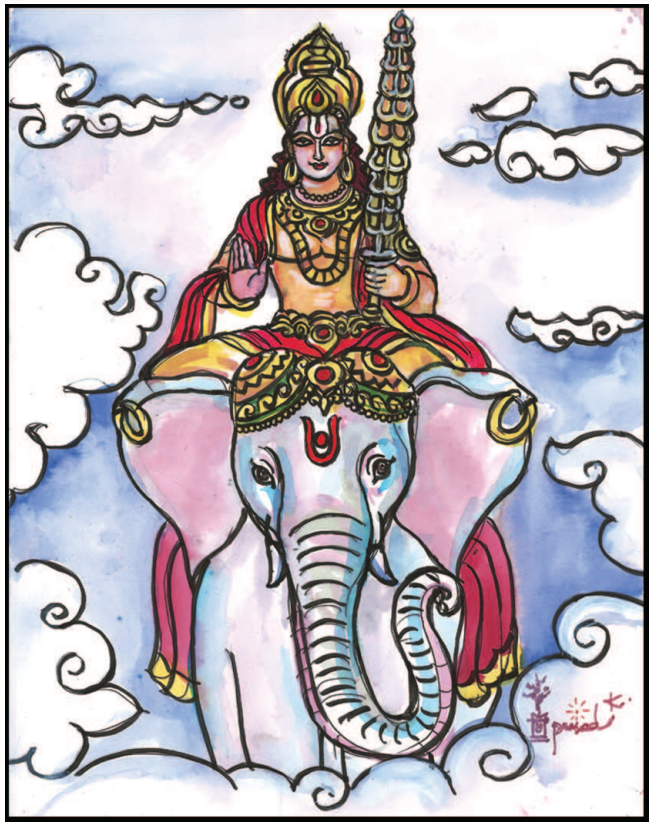

उस प्रदेश के यहाँ गया था। जब इंद्र उस प्रदेश के समीप जा रहा था। तब उस स्वरूप का अदृश्य हो गया। उस प्रदेश में दिव्य मंगल देह धारी के रूप में उमा प्रत्यक्ष हुई है। इंद्र ने उमा से पूछा कि- ''गायब हुए उस यक्ष कौन था?'' इससे उमा ने जवाब दिया कि- वह परब्रह्म था, उनके अनुग्रह के कारण ही आप विजय पाये हैं। इंद्र कृतज्ञ होकर परब्रह्म की प्रार्थना की। देवताओं में इंद्र, अग्नि, वायु ने परब्रह्म के पास जाकर आये थे। इसलिए श्रेष्ठ बन गये हैं। परब्रह्म स्वरूप के बारे में इंद्र ने पूरा ग्रहण किया है इसलिए वह देवताओं के राजा बनकर 'देवतालोक का अधिपति' बन गया है।

२)अग्निदेव : पंचमहाभूतों में अग्नि एक हैं। आग्नेयाधिपति, तेजस्वि, सात हाथ, चार श्रृंग, सात जीभ, दो सर से युक्त स्वच्छ मंदहास करते हुए स्वरूपधारी है। इनके पिता वैश्वानर है, माता शुचिष्मति है, पत्नी स्वाहादेवी है। उनका आयुध शक्ति है। वाहन भेड़ा है। उनका निवास तेजोवति पट्टण है।

उन्होंने शिव के प्रभाव से जन्म हुआ है। जब वह बालक था तब नारद महामुनि ने इन्हें देखकर कहा था कि - बारहवीं साल में इसका कुछ गंड है। ''अपने माता-पिता की आज्ञा के अनुसार अग्नि ने काशी क्षेत्र पहुँचा। वहाँ शिव के लिए घोर तप किये। इन्द्र ने अग्नि के पास आकर कोई वर माँगने के लिए कहा। इससे अग्नि-तिरस्कार करके कहा कि जब तक शिव पत्यक्ष नहीं होगा, तब तक तप नहीं छोड़ूँगा'' ऐसे कहकर वापस तप करने लगा। इससे इंद्र ने क्रोध से अपने वज्रायुध से पीट कर अग्नि को बेहोश कर दिये। तब शिव प्रत्यक्ष होकर अग्नि की रक्षा करके कई वर प्रसाद किये। आग्नेयाधिपत्य का अनुग्रह दिया। ये अष्टवसुओं में एक था। सर्वभक्षक होने पर भी महापवित्र है। देवताओं को हव्य भागों को देना इनकी वृत्ति है। परब्रह्म स्वरूप के बारे में जानने का प्रयत्न किये गये पहला व्यक्ति था। इसलिए सकललोकैक वंदित होकर देवताओं में श्रेष्ठ हुआ था।

३) यमदेवता यम पितृगणाधिपति था। दक्षिण दिशा के भाग में इनका परिपालन था। इनका पिता सूर्य भगवान

था। इनकी माता संज्ञादेवी है। इनकी पत्नी श्यामलादेवी है। आयुध दंड है। वाहन महिष है। इनका निवास संयमनिपट्टण है। यम महाउग्र धर्मात्मा है। यमुना नदी यम की बहिन है। चित्रगुप्त, लेखरि, चंड़, महा चंड इनके सेवक हैं। धर्माधर्म विवेचना में, न्याया-न्याय परिरक्षण में यह अत्यंत समर्थ था। पापियों को शिक्षा देने में अत्यंत समर्थ हैं। इनका दूसरा नाम समवर्ति था। शनेश्वर इनका सौतेली माँ का पुत्र है। पुण्यात्माओं को प्रसन्न रूप में, पापात्माओं को भयंकर रूप से दिखाई देनेवाले यमधर्म को पीपल पेड अत्यंत प्रिय है।

४) निऋति देवता : निऋति भगवान नैरुति दिशा का दिक्पालक है। लोकाधिपति है। सत्पुरुष, कीर्तिमंत है। उनकी पत्नी दीर्घदेवी है। आयुध कुंत है। वाहन आदमी है। उनका निवास कृष्णांगन नगर है। यह पूर्वजन्म में पिंगाक्षु नाम से कुलवृत्ति को स्वीकार नहीं करके सदाचारवर्तन के रूप में रहा था। ऐसे रहे उनको अपने चाचा दारक अत्यंत दुष्ट है। उन्होंने अपने अनुचरों से मिलकर रास्ते में जानेवाली समूह को कष्ट पहुँचाया था। उनको कई तरह के आयुधों से पीटकर पीडित किये हैं। उनके आर्तनादों को सुनकर पिंगाक्षक वहाँ आकर उनकी

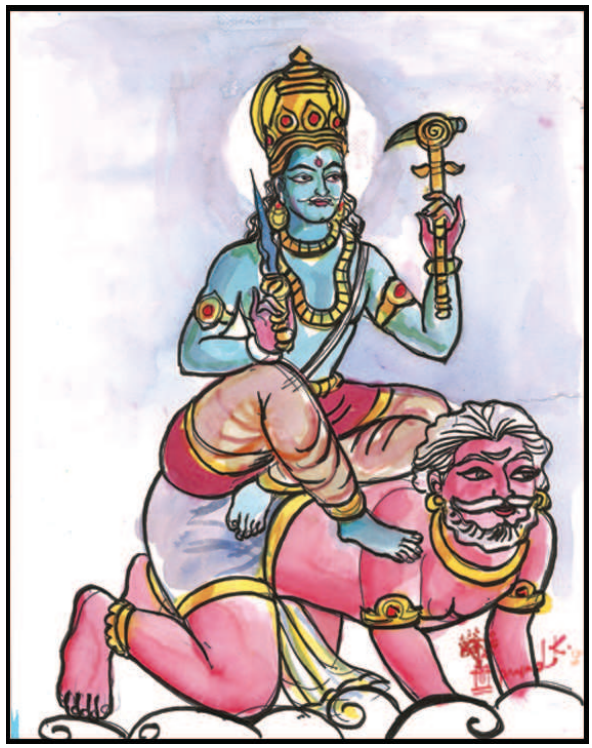

रक्षा करने के लिए अपने चाचा से युद्ध किया। उस युद्ध में दारक और उनके अनुचर मिलकर पिंगाक्षक को बाणों से मारकर उनकी हत्या कर डाला। परोपकारपरायण, दैवभक्तियुत, सदाचार संपन्न, धर्मात्म पिंगाक्षक इस प्रकार मरकर पुण्य लोक की प्राप्ति की। शुभगुण संपत्ति के द्वारा नैरुति (निऋति) लोकाधिपति के रूप में नियुक्त होकर प्रख्यात हुआ है।

५) वरुणदेवता : यज्ञों के समय में हविर्भागों को देने के लिए आमंत्रित किये जाने वरुण पश्चिम दिक्पालक है। जलाधिपति है। इनके पिता कर्दमप्रजापति है। इनकी पत्नी कालिकादेवी है। इनका आयुध पाश है। वाहन मगर है। निवास स्थान श्रद्धावती पट्टण है। इनका दूसरा नाम शुचिष्मंत भी है।

बचपन में शुचिष्मंत अपने दोस्तों से मिलकर एक सरोवर के तट पर खेलते समय एक मगर ने इसको पकडकर

मुँह में भरकर समुद्रक के पास ले गयी। शुचिष्मंत के दोस्त उनके पिता कर्दममुनि से कहा कि- शुचिष्मंत को मगर ने खा लिया। कर्दम निश्चल होकर तप करने लगा। महाशिव ने अपने दूत को किसी काम पर समुद्रक के पास भेजा, वहाँ शुचिष्मंत को देखकर पूछा कि- ''कर्दममुनि के पुत्र को यहाँ क्यों लाया?। कर्दममुनि के पुत्र के बारे में सुनते ही समुद्रक डरकर उस बालक को शिवजी के पास भेजा। शिवजी ने उन्हें कर्दममुनि के पास भेज दिया। शिवदर्शन के प्रभाव से शुचिष्मंत को ज्ञानोदय हुआ। पिता की आज्ञा लेकर काशीपट्टण में शिवजी के लिए कठोर तप का आचरण किया। शिवजी प्रसन्न होकर वर माँगने के लिए कहा। वरुणपथ को देने की माँग की। शिवजी ने अनुग्रह किया। उस दिन से शुचिष्मंत वरुण होकर वरुण लोक का अधिपति होकर प्रख्यात हुआ है।

६) वायुदेवता : पंचभूतों में वायु एक है। सर्वव्यापक है। महाबलवान है। वायुव्य दिशा के अधिपति वायुदेव, जीवकोटि का प्राणाधिक है। शिव के वर प्रभाव के कारण दिक्पतित्व, प्राणापानादि पंचमूर्तिमत्व, सर्वगत्व, सर्वसत्त्वावबोधकत्व इनको प्राप्त हुई। वायुदेव पूर्वजन्म में पूतात्म नामक एक ब्राह्मण था। कश्यपमहर्षि ज्ञाति, इनकी पत्नी अंजनादेवी है। आयुध ध्वज है। वाहन मृग है। इनका निवास गंधवति पट्टण है। वायुदेव ने कुंजर की पुत्री अंजना नामक वानर स्त्री को देखकर मोह किया। वायुदेव के अनुग्रह से वह अपने पातिव्रत्य का भंग नहीं होने के जैसे आंजनेय (हनुमान) नामक पुत्र को जन्म दिया। वायुदेव को आंजनेय औरसपुत्र है। वायुव्याधिपति वायुदेव कई पुराणेतिहासों में कई जगह दर्शन देता है। अग्नि का यह अच्छे दोस्त है।

७) कुबेरदेव : कुबेर सकल देवता प्रियतम है। उत्तर दिशा का अधिपति है। धनपति, भाग्यशाली है। कुबेर के पिता विश्रवोब्रह्म है। इनकी माता इलबिला है। इनकी पत्नी चित्ररेखादेवी है। आयुध खड्ग है। वाहन घोडा है। इनका निवास अलकापुरि पट्टण है। रावणब्रह्म इनके सौतेली माँ के पुत्र है। कुबेर ब्रह्मदेव के लिए तप करके नलकूबर नामक सुंदर पुत्र को, लोकपालकत्व को,

धनाधिपत्य को, शंकर के सख्य के रूप में, लंकानगर को वरों के रूप में माँगा है। ब्रह्मदेव ने अनुग्रह किया था। इतना ही नही पुष्पक नामक दिव्य विमान को भी दिया।

रावणब्रह्म वरगर्व से लोकों को पीढित करते हुए भाई कुबेर को भी हिंसा करके उनके यहाँ से पुष्पक विमान और लंकानगर को अपने वश में कर लिया। कुबेर शिव के यहाँ पहुँचने पर शिव ने उन्हें अलकापुरि नगर को प्रसाद किया। कलियुग दैव श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने पद्मावती देवी से विवाह करते समय इन्हीं के पास आकर धन को ऋण के रूप में माँगने आये थे। इन्होंने पीपल पेड को साक्षी के रूप में रखकर स्वामी को ऋण सहाय किया है। इसके लिए सूदग्राहक (वड्डिकासुल) स्वामी आज भी कुबेर को पैसा देता ही रहा। महालक्ष्मी कटाक्ष संपन्न कुबेर धनात्म, धर्मात्म भी है।

८) ईशान्य : साक्षात् ईशान्य दिशा के अधिपति परमशिव है। जगदंबा पार्वती माता उनकी पत्नी है। आयुध त्रिशूल है। वाहन वृषभ है। निवास स्थान यशोवती पट्टण है। पार्वतीपरमेश्वरों को आदिदंपति के रूप में प्रतीति है। यह शंकरजी जो वर माँगता है उनको बराबर नहीं कहकर देने के कारण इनको भोलाशंकर नाम पडा। यह महाशक्तिमान है। त्रिमूर्तियों में एक है। सर्वस्वतंत्र है। भूतगण संसेवित होकर, पल में भस्म करने की शक्ति रहने वाले तीसरे आँख

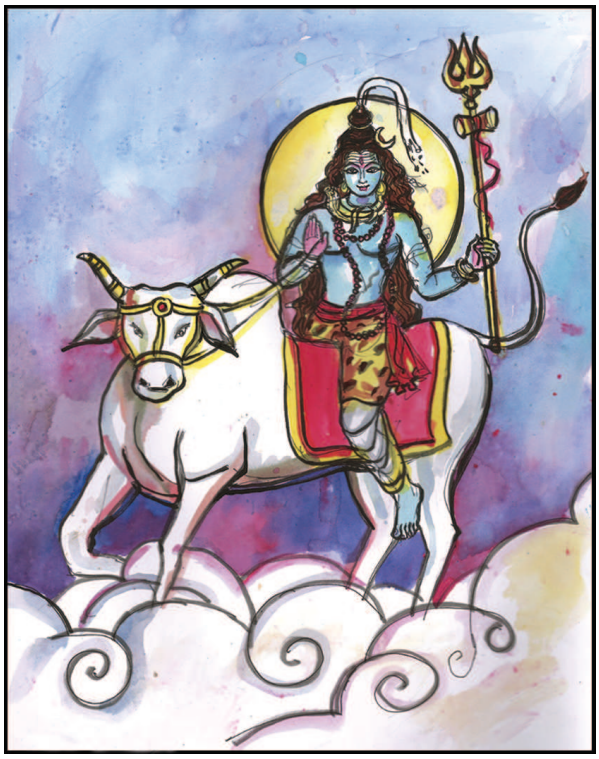

सुशोभित यह लयकारकर कर्ता है। कैलाश इनका निवास स्थान है। लोकोपद्रवकारक गरल को सागर में उद्भव होने पर उसको पीकर लोकों का उद्धार किया। यह शिवजी सर्वशक्ति संपन्न है। आग्रहानुग्रह समर्थ है। विष्णु के प्राण दोस्त है। भृगुमहर्षि शाप के कारण लिंगाकार में पूजाएँ स्वीकार करने वाले परमेश्वर सबका पूज्य है। वंदनीय, महानुभाव है।

ऊपर बताये गये सारे अष्टदिक्पालकों को भी स्वामीजी के ब्रह्मोत्सवों में स्मरण करके पुनीत हो जायेंगे।

दशहारिणी-दुर्गा

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

त्यौहारों का परम उद्धेश्य :

हम भगवान के सृजित सुरभित पुष्प हैं। उस दैव के पादपद्मों के यहाँ अर्चा कुसुम बनना ही हमारे जीवन का परमार्थ है। मानव जीवन के परमार्थ को याद करने में अलारम की तरह उपयोग में आनेवाले हैं, ये पर्व और त्यौहार।

हमारे लिए इतने त्यौहार क्यों; ऐसा कुछ लोगों के मन में प्रश्न उत्पन्न हो सकता है। मन को अच्छे मार्ग में चलाने के लिए शिक्षण की आवश्यकता है; किंतु बुरे रास्ते पर चलने के लिए तो किसी प्रकार के शिक्षण की जरूरत नहीं है ना। ऊपर से हम कलियुगवासी हैं; मन्दबुद्धिवाले हैं; अच्छे विषयों की ओर मन यों ही झुकनेवाला नहीं है। जिस प्रकार पानी नीचे की तरफ बहता है, ठीक उसी प्रकार मन नीच विषयों की ओर दौड लगता है। अक्सर वैसे मन को रोक कर जीवन का परमार्थ याद दिलाने में ये त्यौहार कितने ही उपयोगकारी हैं; यही इसका परमार्थ है।

सामाजिक विकास, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक औन्नत्य, आध्यात्मिक संदेश, धर्म और अधर्म से बन्धी हुई गाथाओं का समाहार हैं, हमारे सारे त्यौहार; इसे भूलना नहीं चाहिए। वास्तव में हमें क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? कैसे रहना चाहिए?

कैसे न रहना चाहिए? उन्नति का मार्ग कौन सा है? कौन सा मार्ग पतन की ओर ले जाता है? ऐसा जीवन नैया के लिए पतवार की तरह मार्गदर्शन करने के लिए ही त्यौहारों का आविर्भाव हुआ। जीवन के परमार्थ को बार बार याद करना इन त्यौहारों का परम प्रयोजन है।

आदिपराशक्ति की आरधना करने वाली आदर्श भूमि

स्त्रियों में जगन्माता के स्वरूप का दर्शन करने वाले श्रीरामकृष्ण के संचरित महोन्नत देश है हमारा। स्त्रियों को मातृमूर्तियों के रूप में भावना करने वाली संस्कृति का निलय है हमारी मातृ-भूमि; ऐसा स्वामी विवेकानन्द ने कीर्तित किया। जहाँ स्त्रियाँ आँसू बहाती हैं, वहाँ श्रीसंपत्तिया नहीं ठहरती; स्त्रियों को पीडा पहुँचायेंगे तो अरिष्ट व्याप्त होंगे; ऐसा विश्वास करनेवाली आर्य भूमि हमारी है। विद्या दायिनी सरस्वती; सौभाग्यप्रदायिनी लक्ष्मी; शक्तिप्रदायिनी पार्वती... इस तरह तीनों माताओं की आराधना करनेवाली देव भूमि हमारी है। ''उन्मेष निमिषोत्पन्न विपन्न भुवनावलि'' - पलक मारने भर में सृष्टि, नेत्र कांति प्रसारित होने मात्र में स्थिति, पलकें

मूँदने मात्र में लयों का निर्वहण करने वाली आदिपराशक्ति का आविर्भूत आध्यात्मिक भूमि है हमारी।

दशहरा... दसरा

नियन्त्रण में न रहनेवाले दशेंद्रिय, मानव के द्वारा पाप-कर्म करवाते हैं। इन दशेंद्रियों द्वारा मानव दस प्रकार के पाप-कृत्य करता है। वे हैं- लूटमार, हिंसा, स्त्रीव्यामोह, लोभ, छलकपट, परुषवाक्य, उसत्य, पर-निंदा, चुगुलखोरी और अधिकार का दुर्विनियोग। इन दशविध पापों का हरण करने वाली जगदंबा की आराधना जिस त्यौहार के अवसर पर करते हैं, वह ''दशहरा'' है।

बाल्यावस्था, कौमारावस्था, यौवनावस्था, वार्धक्यता नामक चार दशाएँ मानव के जीवन में घटित होती हैं। इन चार दशाओं को पार करना चाहे तो जन्म राहित्य की स्थिति प्राप्त करनी चाहिए; वह मोक्ष है; ऐसा शास्त्रों ने परिभाषित किया। श्रीरामकृष्ण जी कहते है कि यदि जगन्माता का अनुग्रह प्राप्त न हो जाय तो मोक्ष-प्राप्ति असाध्य है; मोक्ष द्वार की चाभियाँ माता के हाथ में रहती हैं; माता का अनुग्रह प्राप्त हो जाय तो मोक्ष द्वार खुल जाते हैं।

जन्म राहित्य की स्थिति प्राप्त करने के लिए दशविधपापों का हरण होने जगन्माता की आराधना जिस त्यौहार के मौके पर करते हैं, वही त्यौहार ''दशहरा'' है। कालान्तर में यह दशहरा शब्द ''दसरा'' में रूपान्तरित हुआ; ऐसा बुजुर्ग लोग कहते हैं।

सिंहवाहिनि... हृदयनिवासिनि

आदिपराशक्ति, महिषासुर का वध करने सिंह-पर आरूढ़ हो निकली। जगज्जननी सिंह को ही वाहन के रूप में क्यों चुनलिया? सिंह पीछे से हमला नहीं करता; धैर्य के साथ आगे से ही सामना करता है। इसलिए सिंह, धर्म, धैर्य-साहस का प्रतीक है। मृगराज सिंह का शिर बडा रहता है। वह उन्नत विचारों का संकेत है। याने जीवन में धर्म का आचरण करनेवाले के हृदय में जगदंबा विराजमान हो रहती है; ऐसा कहने के उद्देश्य से ही जगज्जननी सिंह पर अधिरोहित हुई।

शिरोधारिणी... लयकारिणी

काली माता ने अपने दायें के दोनों हाथों में अभय व वरद मुद्राएँ धारण की; वे रक्षा को सूचित करते हैं। अपने बाएँ तरफ के दो हाथों में खड्ग और खंडित शिर का धारण किया; वे शिक्षण के सूचक हैं। शिर, ज्ञानेंद्रियों का निलय है; विचारों का अधिष्ठान स्थान (निवास स्थान) है। जो इंद्रियों पर नियन्त्रण न रखकर अकृत्य करने तैयार रहता है, जिसके विचार हानिकारक हैं, उसका सिर खंडित होता है; ऐसा संकेत काली माता के हाथ में का खंडित सिर देता है।

इसलिए इंद्रियों पर नियन्त्रण न रखने वालों, दुर्विचार करने वालों का शिक्षण (दंड) जगन्माता करती है। इंद्रियों पर नियंत्रण रखकर धर्मपथ पर चलने वालों के हृदय में जगन्माता विराजित होती है; ऐसा जानकर धर्म-मार्ग पर चलने का यत्न करना चाहिए। हममें विलसित कामवासनाओं का नाश करके दशातीत (जन्मराहित्य) स्थिति प्रदान करने उस जगन्माता से प्रार्थना करें।

सर्वेजनाः सुखिनोभवन्तु!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक

भक्तगण व कलाकार वृन्द

३०-०९-२०१९ सोमवार
रात - महाशेषवाहन

०१-१०-२०१९ मंगलवार
दिन - लघुशेषवाहन

०१-१०-२०१९ मंगलवार
रात - हंसवाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक

भक्तगण व कलाकार वृन्द

०२-१०-२०१९ बुधवार
दिन - सिंहवाहन

०२-१०-२०१९ बुधवार
रात - मोतीवितानवाहन

०३-१०-२०१९ गुरुवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन

०३-१०-२०१९ गुरुवार
रात - सर्वभूपालवाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक

भक्तगण व कलाकार वृन्द

०४-१०-२०१९ शुक्रवार
रात - गरुडवाहन

०५-१०-२०१९ शनिवार
दिन - हनुमंतवाहन

०५-१०-२०१९ शनिवार
रात - गजवाहन

०४-१०-२०१९ शुक्रवार
दिन - पालकी में
मोहिनी अवतारोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव

३०-०९-२०१९ से ०८-१०-२०१९ तक

भक्तगण व कलाकार वृन्द

०६-१०-२०१९ रविवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन

०६-१०-२०१९ रविवार
रात - चंद्रप्रभावाहन

०७-१०-२०१९ सोमवार
रात - अश्ववाहन

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(पंचम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि तापडिया

९०

श्रीमते रामानुजाय नमः

बस इसी जन्म के अन्त में संसार बन्धन से छूट कर जरूर परमधाम जाने की इच्छा रखने वाले मुमुक्षुओं को इतने ही मात्र जानने की अति आवश्यकता है। जैसे कहा है कि :-

स्वज्ञानं प्रापक ज्ञानं प्राप्यज्ञानं मुमुक्षु भिः।
ज्ञानत्रयमुपादेयमेतदन्यं न किञ्चन।।

इसका भाव पहले ही कह चुके हैं बस इतने ही में सारा अर्थ पञ्चक भरा हुआ है। इतना विषय तुम जरूर हृदय में रखो। इतने को कभी नहीं भूलो। हमारा उपाय याने साधन, उपेय याने फल भगवान हीं हैं। इन दो बातों का नित्य ही अनुसन्धान किया करो और इन बातों को कृपा कर तुम्हें जिसने समझाया है उस परम हितैषी महा उपकारी कृपा सागर ध्यान किया करो। उनका मानसिक पूजन किया करो। उस श्री गुरुदेव का हरेक प्रकार से व्यवहार भाव हटाकर सच्चे दिल से उनकी सेवा किया करो। सुबह उठते ही उनका स्मरण करके गद्‌गद् कण्ठ से उनको साष्टांग कर लिया करो। उनके दर्शनों से कभी तृप्ति न पाओ तथा उनकी सेवा से कभी भी तृप्ति न माना करो। उनकी सेवा के लिये नित्य नई चाहना किया करो। क्यों कि तुम्हें जो लौकिक अथवा पारलौकिक सबही उनके श्रीचरणों की कृपा से प्राप्त भया है। तुम्हें मालूम ही है, जब तक उनके श्रीचरण कमल तुम्हें नहीं मिले थे तब तक तुम्हारी क्या दुर्दशा थी और कैसे-कसे संशय भ्रम में तुम पड़े थे। इस लोक का जो सुख तुम्हें मिला है और मिल रहा है यह सब उसी गुरु देव के श्रीचरण कमलों के सम्बन्ध का प्रताप है। और आगे जो तुम्हें नित्य कैंकर्य मिलने वाला है वो भी उन्हों के श्रीचरण सम्बन्ध से ही जानो। यदि वह गुरुराज तुम्हें नहीं मिले होते तो तुम्हारी क्या-क्या दुर्दशा बदी थी सो तुम से छिपी नहीं है। इस प्रकार अपने श्री गुरु चरणों का स्मरण करते-करते महान् मुमुक्षु महा कृतज्ञ महात्मा श्री धनी रामजी गद्गद कण्ठ होकर मारे प्रेम के विह्वल हो गये! तदनन्तर नित्य क्रियाओं से निवृत होकर भगवान श्रीरंगनाथ का आराधना करके प्रसाद पाकर महात्मा धनीरामजी थोड़ी देर विश्राम कर गये। उधर वे जो दोनों मुमुक्षु थे दामोदरजी तथा रघुबीरदासजी वे लोग भी श्रीहरि का पूजन करके भगवान का महाप्रसाद लेकर कुछ देर आराम किये। बाद उठ कर नित्य नियमों से निपट कर कालक्षेप की प्रतिक्षा करते हुए बिराजे थे। उधर नित्य के समान उपदेश के समय पर श्री रंगबाग में हजारों मुमुक्षु महात्मा लोग आकर उपस्थित हुए। श्री देवराज गुरु के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए सभी बिराजे थे। इतने में अपने कुछ शिष्यों के साथ श्री देवराज गुरु का शुभागमन हुआ। सब श्रोता लोग एक दम उठ कर खड़े हो गये। श्री देवराज गुरु भी व्यासासन पर बिराज गये। इतने में पूर्वोक्त दोनों मुमुक्षुओं के साथ महात्मा धनीरामजी भी उन श्रेताओं में सम्मिलित हुए। बाद सब श्रोता लोग तुलसी पुष्प माला आदि से श्री देवराज गुरु का पूजन करके लम्बी साष्टांग प्रणाम करके सब बिराज गये। बाद एक कण्ठ से श्री देवराज गुरु का सबों ने जय-जयकार किया।

अनन्तर प्रथम के समान मंगल कीर्त्तन हुआ। फिर श्री देवराज गुरु उच्च और मधुर स्वर से गुरु परम्परा का अनुसन्धान करके अपने उपदेशामृत को प्रारम्भ किये। उपदेशारम्भ के पूर्व नेत्र मींचकर हाथ जोड़ कर प्रेमाश्रु के साथ श्रीरंगनाथ भगवान का स्मरण करके श्री देवराज गुरु गद्गद् हो गये। बाद में सब श्रोताओं की तरफ चारों ओर एकबार देखे। पूर्वोक्त दोनों मुमुक्षुओं के साथ दूर बैठे हुए महात्मा धनीरामजी को अपने नजदीक आकर बैठने का इशारा किये इस प्रकार उन तीनों मुमुक्षुओं के

ऊपर श्री देवराज गुरु की असीम कृपा जानकर सबों ने उन लोगों के भाग्य की सराहना की। बाद में फिर एक बार जय-जय ध्वनि हुई। सब श्रोताओं का एकाग्र चित्त था। सब से सब श्री देवराज गुरु के तरफ ही देखते थे। भीड़ बहुत थी लेकिन कोई किसी से बात नहीं करता था। जितने श्रोता थे सब के सब सच्चे मुमुक्षु थे। इन श्रोताओं में कोई भी संशय भ्रम वाला, तर्क वितर्क वाला नहीं था। इस वक्त वहाँ की जो शोभा थी वह अलौकिक थी। इतने में श्री देवराज गुरु फिर भी अपने गुरुदेव के चरणों का स्मरण करके मधुर स्वर से बोले- हे उपस्थित मुमुक्षु महात्माओ! परमदयालु भगवान श्री लक्ष्मी पति को कोटि-कोटि धन्यवाद है कि हम लोगों के लिए आज ऐसा सुअवसर दे रखा है। पहले ही आप लोगों से कईबार निवेदन कर चुका हूँ कि इस मनुष्य देह प्राप्ति के लिए देवता लोग भी तरसते हैं और बारम्बार परमात्मा से इस भारत खण्ड में मनुष्य देह प्राप्त करने के लिये प्रार्थना भी किया करते हैं। इसका कारण यही है कि यदि चेतन इच्छा करे तो मनुष्य देह से बहुत शीघ्र तथा अवश्य सद्गुरु का कृपा पात्र बन कर आवागमन से रहित हो सकता है। जितनी जल्दी मनुष्य देह में भगवान की प्राप्ति हो सकती है उतनी जल्दी किसी देह में नहीं। जिसके लिये देवता लोग भी प्रार्थना करते हैं वह मनुष्य देह हम लोगों को कृपा सागर भगवान स्वयं कृपा करके दे रखे हैं। अब हम लोगों को यही चाहिये कि इस मनुष्य देह के पाने का प्रधान फल जो परमपद की प्राप्ति है वह अवश्य हो जावे। परमपद मिलने के लिये शास्त्रों में दो प्रकार का उपाय बताया गया है। एक भक्ति दूसरी शरणागति। उन दोनों में भी शरणागति को सुलभ कहा है। याने जिसको इसी जन्म के अन्त में सदा के लिये आवागमन से रहित हो जाने की इच्छा हो, उसको भगवान के शरणागत होकर रहना चाहिए। साधन भक्ति कितनी कठिन है और शरणागति कितनी सुलभ है इस बात का भी विचार पहले बहुत कुछ कर आया हूँ और विस्तार से इसको फिर भी वर्णन करूँगा, शरणागत मुमुक्षुओं को क्या छोड़ना चाहिए, कैसे रहना चाहिए कलके उपदेश में इस बात को कुछ कहा था। उसी प्रसंग में से कुछ रह गया है। पहले उसी को निवेदन करके पीछे भक्ति और प्रपत्ति का भलि भांति विवेचन करेंगे। शास्त्रों का बारम्बार यही कहना है कि जिसको संसार चक्र से छूट कर परमपद जाने की जरूरी इच्छा हो उस मुमुक्षु को चाहिए कि सबसे पहले अपने में से अहंकार को समूल नष्ट कर दे। मुमुक्षुओं के लिये अहंकार एक ऐसा बलवान शत्रु है कि भगवान के नजदीक से भी दूर कर देता है। शास्त्रों का कहना भी है और बड़े-बड़े महात्माओं का अनुभव भी है कि भगवान अहंकार वाले चेतन को अपने नजदीक नहीं रखते हैं। देखने सुनने में आता है कि गोपियों के समान कोई नहीं हो सकता। दुनियाँ में जितने आस्तिक मुमुक्षु हैं वे सभी गोपियों के भाग्य की बारम्बार सराहना करते हैं तथा उन गोपियों के गुणों को गा-गा कर अपने आत्मा का कल्याण किया करते हैं। ये भी यथार्थ ही है। जिन लोगों के साथ परमात्मा साक्षात्कार थे, जिन लोगों के साथ अनेक लीला करते थे उन लोगों के समान जगत में बड़भागी कौन हो सकता है। उन्हीं गोपियों के बाबत रास करने के समय एक प्रसंग आता है कि-

''आत्मानं मेनिरेस्त्रीणां बरिष्ठं सर्वथा भुवि।।''

इसका मतलब यह हुआ कि गोपियों से भगवान जब रास करने को उद्यत हुए तब गोपी लोगों में अहंकार आया। वे सब अपने मन में ऐसा सोचने लगीं कि हम लोग अत्यन्त सुन्दरी हैं। इसी कारण से भगवान हम लोगों पर मोहित होकर रास करते हैं। हम लोगों के समान इस जगत भर में सुन्दरी स्त्रीयाँ नहीं हैं। इस प्रकार का जब उन लोगों में अहंकार आया तब-

''तासां तत्सौभगमदं वीक्ष्यमानं च केशवः।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत।।

(क्रमशः)

चेतावनी तथा कर्तव्यबोध

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - डॉ.बी.ज्योत्स्नादेवी

चेतवनी देने वाले बहुत आम है, लेकिन चेतावनी के साथ तात्कालिक कर्तव्य सिखाने वाले दुर्लभ है। मनुष्य का सबसे बडा दुश्मन 'डर' के बारे में भगवद्गीता में बडे शानदार से चेतावनी दी है, इतना ही नही बल्की कर्तव्य का बोध भी किया गया है।

''हे पार्थ! प्रत्येक मनुष्य में शक्ति छिपी रहती है। लेकिन डर के कारण शक्ति कम होती जाती है। कार्य क्षेत्र में कूदने, उत्साह के साथ काम करने और लक्ष्य को बार-बार स्मरण करने या याद करने से ऊर्जा बढ़ती है। जब अर्जुन ने शत्रु को देखा, तो वह अपने सभी रिश्तेदारों को देखकर डर गया की उनसे कैसे युद्ध किया जाय। उन सभी को मारने के डर से उसे त्रस्त कर दिया। इसलिए वह शक्तिहीन हो गया। मानसिक कमजोरी उस शक्तिहीनता का कारण है। भगवद्गीता यह चेतावनी

देती है कि उस तरह के हृदय कमजोर या मानसिक कमजोरियों को त्याग कर देना है। छात्र या विद्यार्थी भी इसी तरह कई मौकों पर मानसिक कमजोरियों के शिकार बनते है जैसे परीक्षा के समय, इंटर्व्यू देते समय, प्रवेश परीक्षा लिखते समय इस तरह कि मानसिक असन्तुलन उनमे पैदा होती है। भगवद्गीता ने न केवल घृणित स्थिति के बारे में चेतावनी देती है, बल्कि इससे छुटकारा पाने के लिए एक व्यावहारिक सलाह भी देती है कि इस तरह के मानसिक कमजोरी से बाहर आकर अपने लक्ष्य की ओर कार्य करने के लिए संसिद्ध होना चाहिए। ऐसा करने से हमे मानसिक उत्साह मिलता है और लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। जितने भी लोग (शक्तिशाली, प्रतिभाशाली) हमारे समाने खडे होने पर भी हर निडर, निर्भय के साथ पिछे नही हटेंगे और आगे अपना कदम लक्ष्य की ओर बढायेंगे।

श्री रामचन्द्रजी साक्षात भगवान है। उनकी सहायता करने के लिए महान बल योद्धा वानर सेना है। सभी वानर सेना, श्रीलंका तक पुल का निर्माण करने में निमग्न है। बडे बडे चट्टानों, पत्थरों, पेडों को इकट्ठा करके समुद्र में डालकर पुल का निर्माण शुरु करने लगे। एक छोटी सी गिलहरी, उनके काम और रामकारी को देखकर, वह भी रामकार्य में भाग लेना चाहती थी। उसकी तुच्छता का इससे कोई लेना-देना

नही था। उससे पहाड का धैर्थ था। वह अपने को उन महान योद्धा शक्तिशाली वानर से तुलना नही किया और न ही चिंतित था। वह गिलहरी तुरंत कारवाई में कूद गई और अपनी शक्ति के अनुसार वह रेत के कुछ कणों को उठाकर समुद्र में फेंक रही थी। यह काम देखकर सभी वानर हसने लगे। कुछ वानर गिलहरी के काम को देखकर मजाक करने लगे। लेकिन वह अपना कर्तव्य (काम) नही छोडा, बल्कि अपना काम जारी रखा। इतने में यह खबर भगवान राम तक पहुँची, तुरंत श्रीराम उस गठना स्थल पहुँचे और उस छोटी सी गिलहरी को अपने हाथ में लिया और दूसरे हाथ से उसे प्यार किया। श्रीरामचन्द्र द्वारा दिखाया गया यह प्रेम अब भी गिलहरी के पीठ में रेखाएँ दिखाई देते है। हमे उन रेखाओं के देखकर प्रेरित होना चाहिए कि मेहनत करने वालों को जरुर सफलता मिलती है। जो कभी भी अपने आप को तुच्छ नही समझता और मनोधैर्य के साथ आगे चलता है उन्हे बडों का आशीर्वाद भी हमेशा साथ होगा।

लक्ष्य साधकों में तीन विशिष्ट विशेषताएँ होती है। उनमे गंभीर इच्छाशक्ति होती है, उनका स्थिर लक्ष्य होता है और दृढ़संकल्प भी होता है। इन तीनों से वे हमेशा कार्यसिद्ध होंगे। रामदूत हनुमान के पास अपार शक्ति है यह कहाँ से आया? यह रामकार्य करने की गंभीर इच्छा से आया है। लंका जाकर सीता देवी की तलाश करना ही हनुमान का लक्ष्य था। इसलिए उन्होने सप्त समुद्र पार करके सीता देवी की तलाश में सफल हुआ और रावण को अपमान करके वापस आया। इसलिए आज के युवक को स्थिर लक्ष्य, गंभीर इच्छा, दृढ़संकल्प के साथ आगे बढ़कर जीत को हासिल करना है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

(गतांक से)

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

शेमनल् वीडुम् पोरुळुम् तरुममुम्, शीरिय न-
र्क्कामम् मेन्निवै नान्गेन्बर्, नान्गिनुम् कण्णनुक्के
आदमु काम मरम् पोरुळ् वीडिदर्क्के त्रुरैत्तान्
वामनन् शीलन्, इरामानुज निन्द मण्मिशैये ॥४०॥

सर्वेषामपि परमक्षेमभूतो मोक्षः अर्थः धर्मः अत्यन्तमुत्कृष्टः काम इति चतुरः पुरुषार्थानाचक्षते वैदिकाः। एतेषु भगवद्विषयकः काम एव कामपदाभिलप्यः। स एव शेषिभूतः पुरुषार्थः; धर्मार्थमोक्षास्तु तच्छेषभूता एवेति परमकारुणिको भगवद्रामानुज इह प्रत्यपादयत्। (श्रीरामानुजार्येण शश्वत्क्रियमाणेषूपन्यासेष्वन्यतमस्यात्र गाथायां विन्यसनमभूदिति वेदितव्यम्। अर्थकामयोर्हेयतया कथनमपि शास्त्रेष्वस्ति नाम। भगवद्भावतापचारहेतुभूतं धनमेव त्याज्यम्, भगवद्भागवतकैङ्कर्योपयोगि तु न तथा। एवं शास्त्रदूषितविषयान्तरगोचरः काम एव हेयः, भगवद्विषयकस्तु स परमोद्देश्यः। गाथायामस्यां कामस्यैव शेषित्वं धर्मादित्रितयस्य तच्छेषत्वं च भगवान् रामानुज उपन्यास्थदिति कथ्यते; अत्रैदं हृदयम्; धर्मार्थौ सुखसाधनभूतौ न स्वतः पुरुषार्थौ, अपि तु परतः

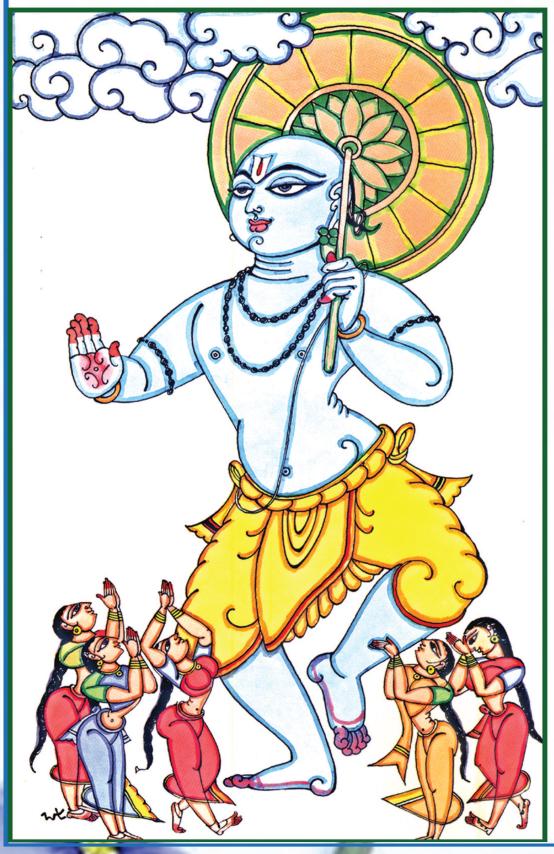

पुरुषार्थावुच्येते। मोक्षस्तु स्वतः पुरुषार्थोऽपि सन् कामादपकृष्यत एव, न तूत्कृष्यते। मुक्तदशापेक्षयाऽपि मुमुक्षुदशाया अभ्यर्हितत्वमवगच्छतामेवैतत्तत्त्वं सुबोधमिति नात्र विस्तरः। अनुबुभुक्षाकालिको रसो हि निस्समाभ्य धिक इति।

सब के क्षेमदायक मोक्ष, अर्थ, धर्म और श्रेष्ठ काम, ये चार (वैदिकों से) चतुर्विध पुरुषार्थ कहे जाते है। इन चारों में से भगवद्विषयक काम (अथवा प्रेम) ही काम शब्द का अर्थ है। धर्म, अर्थ व मोक्ष नामक तीनों इस काम के साधक है। श्रीवामन भगवान के सदृश शीलवान श्रीरामानुजस्वामीजी ने इस भूतल पर इस अर्थ का प्रकाशन किया। (विवरण- श्रीरामानुज स्वामीजी ने ग्रंथकालक्षेपों के सिवा कभी कभी उपदेशरूप फुटकर प्रवचन भी करते थे। इनमें से एक समय के प्रवचन का सार प्रकृत गाथा में उपवर्णित है।

समस्तशास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष नामक चार पुरुषार्थों का वर्णन किया जाता है। इनमें धर्म व अर्थ साक्षात् उपयोग में नही आते, परंतु काम अथवा मोक्ष के साधन ही हो सकते हैं। अतः ये साक्षात् पुरुषार्थ नहीं और साधारण वेदांती लोग यह मानते हैं कि मोक्ष एक ही वस्तुतः पुरुषार्थ है, और अन्य तीनों आभास व हेय हैं। परंतु श्रीरामानुजस्वामीजी का यह सिद्धांत है कि धर्मादि भी सर्वदा हेय नहीं अर्थात् भगवद्भागवतापचार का कारण अर्थ ही हेय है, उनकी सेवा में उपयोग पानेवाला अर्थ तो सुतरां श्रेष्ठ है। एवं धर्म भी स्वर्गादि अल्प फल का साधन होने पर त्याज्य होता है और भगवत्प्रसाद का हेतु होकर उपादेय बनता है। काम भी दो प्रकार का है- शब्दादि क्षुद्र सांसारिक पदार्थ पाने की इच्छा और साक्षात भगवान को ही पाने की इच्छा। इनमें क्षुद्रकाम ही शास्त्रों में निंदित है; किंतु भगवद्विषयक काम अतिश्रेष्ठ है। अब श्रीरामानुज स्वामीजी का यह कहना था कि वास्तव में यह भगवद्विषयक काम एक ही प्रधान पुरुषार्थ है। पूर्वोक्त प्रकार, इसके साधन होकर धर्म व अर्थ भी पुरुषार्थ माने जाते हैं। अब रह गयी मोक्ष की बात। मोक्ष शब्द का अर्थ है परमपद-प्राप्ति। अतः यह भी भगवदनुभव का, अर्थात काम का साधन ही हुआ। अतः यह अर्थ सिद्ध हुआ कि काम एक ही साक्षात पुरुषार्थ है और धर्म, अर्थ व मोक्ष उसके साधनतया पुरुषार्थ। अथवा रसिकों का यह अभिप्राय है कि साक्षात् भगवत्प्राप्ति की अपेक्षा उस प्राप्ति की इच्छा ही रसवत्तर है; अर्थात् मोक्षावस्था से भी मुमुक्षु-अवस्था ही श्रेष्ठ है। परंतु परमानंददायक मोक्ष के ज्ञान से यह मुमुक्षा उत्पन्न होती है; मुमुक्षा ही कामशब्द का भी अर्थ है। तथा च मुमुक्षा अथवा भगवदनुबुभूषा नामक काम ही प्रधान पुरुषार्थ, और मोक्ष उसका साधन मात्र सिद्ध हुआ। आळ्वारों की श्रीसूक्तियों में इस कामकी ही पुष्कल प्रशंसा मिलती है। तिरुमङ्गैयाळवार (श्री परकालसूरी) ने तो मोक्ष का इनकार ही करते हुए काम मात्र को पुरुषार्थ बताया। दूसरे कितने ही आळ्वारों ने उक्त काम को भगवत्प्राप्ति से भी श्रेष्ठ बताया है। इनके अनुसार श्रीरामानुज स्वामीजी ने उपदेश दिया कि काम ही साक्षात् पुरुषार्थ है और धर्म आदि उसके साधन।

क्रमशः

श्री प्रपन्नामृतम्

(५वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

भगवान द्वारा श्रीरामानुजाचार्य की रक्षा

पंडित यादवप्रकाशाचार्य के सन्त्यक्त श्रीरामानुजाचार्य भगवान केशव का ध्यान करने लगे। भक्त पराधीन हस्तिगिरि निवास रसिक भगवान वरदराज लक्ष्मी के साथ पैरों में जूता पहने अंगुलियों में गोह के चर्म का कवच पहने, धनुष-बाण, पीताम्बर धारण किये हुए युवक व्याध दम्पति का वेष धारण कर भगवद्रामानुजाचार्य के पास आये। व्याध-दम्पति को देखकर श्रीरामानुजाचार्य ने पूछा-आप कौन हैं? कैसे इधर आये? कहाँ जा रहे हैं? भगवान रामानुजाचार्य की वाणी सुनकर व्याध-वेषधारी भगवान

बोले-ब्राह्मण श्रेष्ठा! मैं सत्यवती क्षेत्र (कंचीपुरी) जा रहा हूँ आप कैसे इस निर्जन हिंसक पशुओं से भरे हुए घनघोर जंगल में घूम रहे हैं? कांचीपुरी से ही मैं गुरु के साथ गंगा-स्नानार्थ प्रयाग जा रहा था किन्तु कुछ कारणवश यहाँ रुक गया। अब कांची ही जाना चाहता हूँ। किन्तु मैं अकेला और असहाय हूँ। कोई मेरा साथी नहीं। भगवान रामानुजाचार्य की वाणी सुनकर अकारण करुणा-वरुणालय भगवान ने उन्हें अपने साथ लेकर कांची के लिए प्रयाण किया।

उसी रात को रामानुजाचार्य के साथ जब व्याध दंपति सो रहे थे तो व्याधपत्नी ने कहा- ''नाथ! प्यास सता रही हैं, कहीं से जल लाइये।'' व्याधरूपधारिणी श्रीलक्ष्मीजी की वाणी सुनकर व्याधरूपधारी भगवान बोले- ''विशालाक्षि मुग्धस्मिते प्रिये! सन्निकट में ही सज्जनों के हृदय की तरह स्वच्छ जल होने पर भी घोर अन्धकार के कारण जल लाने

में अक्षम हूँ। मेरी सहायता के लिए भगवद्दम्पति ही व्याधरूप धारण करके आये हैं।'' यह अनुमान करते हुए परस्पर बातचीत करते हुए व्याधदम्पति से श्रीरामानुजाचार्य बोले- ''सम्प्रति मैं भी आप लोगों को जल प्रदान करने में अक्षम हूँ किन्तु प्रातःकाल आप लोगों को उत्तम जल प्रदान करूँगा।'' सबेरा होते ही व्याधरूपधारी भगवान बोले-रात्रि में आप हमें जल देने को कहे थे, सन्निकट में ही जल है, अंजुलि में भरकर हमें आप दें। भगवान की वाणी सुनकर रामानुजाचार्य तीन अंजली जल देकर जब चौथी बार जल उठाये तो-व्याधदम्पति को नहीं देखा। चिन्ताकुल हो कूप से बाहर निकलकर सन्निकट में ग्राम, नदी एवं उजली बालूका देखकर लोगों से पूछा कि- ''आप लोग यहाँ कैसे आये। इस देश का नाम क्या है?'' श्रीरामानुजाचार्य की वाणी सुनकर लोगों ने बताया कि- ''यह सांसारियों को भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी कांचीपुरी है।'' सन्निकट में ही ये चमकते हुए मन्दिरों के गोपुर, सामने बहती हुई यह क्षीर नदी एवं सन्निकटस्थ यह फल-फूलों से भरा नगरोद्यान कांचीपुरी का ही है। नागरिकों की उपर्युक्त वाणी सुनकर एवं कांचीपुरी को देखकर आश्चर्य चकित श्रीरामानुजाचार्य ने अनुमान लगाया कि यह भगवान वरदराज का ही प्रभाव है।

इसके बाद उन्होंने अपने घर जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी माता कान्तिमती को सुनाया। कांचीपुरी के लोगों ने आये हुए श्रीरामानुजाचार्य की उपर्युक्त कथा सुनकर आश्चर्य चकित हो उनका दूसरा जन्म ही माना। पुत्र (रामानुजाचार्य) की वाणी सुनकर, उनकी हितकामना से माता कान्तिमती बोलीं- ''पुत्र! इस कांचीपुरी में शबरी के अंश से चतुर्थ (शूद्र) वर्ण में उत्पन्न कांचीपूर्ण नामक एक भगवद्भक्त रहते हैं। सदा अनन्यचित्त से भगवान का ध्यान करके वे भगवान वरदराज के स्निग्ध कृपापात्र बन गये हैं। इस वृत्तान्त को जाकर उनको सुनाओ। माता की आज्ञा पाकर श्रीरामानुजाचार्य ने कांचीपूर्ण स्वामीजी के घर जाकर विनम्रतापूर्वक सम्पूर्ण वृत्तान्त उनको सुनाया।

श्रीरामानुजाचार्य का वृत्तान्त सुनकर श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी बोले- ''रामानुज! आप पर भगवान वरदाराज की अत्यन्त कृपा है इसीलिए उन्होंने आपको आपत्ति से बचाया और नित्य ही आपके हाथों का जल पीने की इच्छा से ही उन्होंने आपसे व्याधरूप धारण करके जल की याचना की और आपके हाथों का जल पीकर अन्तर्धान हो गये। अतः अब आप मेरी बात मानें। आप नित्य ही उस कूएँ से जल लाकर भगवान वरदराजजी को समर्पित किया करें। कांचीपूर्ण स्वामीजी की वाणी सुनकर श्रीरामानुजाचार्य बोले- ''करुणासागर! आपकी बातों का पालन मैं अवश्य करूँगा। भला वेदान्त प्रतिपाद्य भगवान् वरदराज के स्निग्ध कृपापात्र आपकी आज्ञा का भक्तिपूर्वक पालन कौन नहीं करेगा?'' इसके बाद घर जाकर माता कान्तिमती को सारी कथा सुनाकर माता की भी आज्ञा से श्रीरामानुजाचार्य नित्य ही उस कुएँ से सुवर्ण के घड़े से शाश्वत, सिद्धसाध्य पुरुषोत्तम भगवान वरदराज के चरणारविन्दों का ध्यान करते हुए जल समर्पण करने लगे। इस तरह श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी की आज्ञा पाकर, सत्संगति के प्रभाव से, नित्य हो अपने धवल यश का प्रसार करते हुए एवं वरदराज भगवान की सेवा करते हुए श्रीरामानुजाचार्य कांचीपुरी में निवास करने लगे।

॥ श्रीप्रपन्नामृत ५वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥

क्रमशः

नरकचतुर्दशी

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

नरकचतुर्दशी (२८-१०-२०१९)
के अवसर पर...

साल भर में कई सारे त्यौहार और उत्सव आते है उस में सब से प्रधान उत्सव 'दीपावली'। दीपावली महोत्सव सात दिन का होता है। अश्विन कृष्ण एकादशी से लेकर कार्तिक शुद्ध विदिया तक ये दीपावली महोत्सव चलता है।

अश्विन कृष्ण चतुर्दशी याने के नरकचतुर्दशी की बात हम यहाँ करने जा रहे है। शास्त्र में नरकचतुर्दशी का महत्व अधिक बताया है।

नरकचतुर्दशी को काली चौदश, रूप चौदश, छोटी दिवाली या नरक निवारण चतुर्दशी के रूप में भी जाने जाते है। शास्त्रों में बताया गया है कि नरकासुर का वध, कृष्ण, सत्यभामा और काली द्वारा इस दिन पर हुआ था। यह पर्व धार्मिक अनुष्ठान उत्सव और उल्लास के साथ मनाया जाता है। पुराण में कहा गया है कि नरकचतुर्दशी के दिन तिल का तेल में मात्र लक्ष्मीजी का और जल मात्र में गंगाजी का वास होता है।

नरकचतुर्दशी की पौराणिक कथा

एक समय की बात है, पुरातन काल में नरकासुर नामक एक असुर ने कई सारी स्त्रीयों को अपनी केद में रखा था। पूरी धरती पर उसका अत्याचार बढ रहा था, पूरा संसार भय से तप्त थे। उस समय भगवान श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन से, राणी सत्यभामा ने काली का रूप ले के नरकासुर के साथ बडा युद्ध किया और उसका वध कर दिया। अंत में नरकासुर के केद में से सोलाहजार स्त्रीयों को मुक्ति दिलवाई और पूरे संसार को भयमुक्त किया। नरकासुर दमन से पूरा संसार नरक भोग रहे थे। नरकासुर वध से संसार नरक से बाहर निकलकर स्वर्ग में आ गये। इसलिये इस चतुर्दशी को नरकचतुर्दशी कहा जाता है।

इस विषय में एक दूसरी कथा भी है। रंतिदेव नामक एक पुण्यात्मा और धर्मात्मा राजा थे। उन्होंने अनजाने में भी कोई पाप नही किया था। लेकिन जब मृत्यु का समय आया तो उन के समक्ष यमदूत आ खडे। यमदूत को सामने देखकर राजा अचंबित हो गया और बोले मैंने तो कभी पाप कर्म नही किया है फिर भी आप लोग मुझे यमराज के पास क्यों ले जा रहे हो? आप मुझे कृपा करके बता सकते है कि मुझे किस अपराध से नरक में ले जा रहे हो?

यमदूत ने बताया की, ''हे राजन, एक बार आप के द्वार से एक ब्राह्मण भूख लौट गया था, यह उसी पाप कर्म का फल है। यह सुनकर राजा ने यमदूत से एक साल का समय मांगा।

तब यमदूता ने राजा को एक वर्ष की मौका दिया था। राजा अपनी परेशानी लेकर मुनि के पास गये और उन्हें अपनी सारी कहानी सुनाकर उनसे पापमुक्त होने का उपाय पूछा। तब मुनि ने उन्हें बताया की अश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी का व्रत करो और ब्राह्मणों को भोजन कराकर उनके प्रति हुये अपराधों के लिये क्षमा याचना करो। राजा ने वैसा ही किया और जैसा मुनियों ने उन्हें बताया। इस प्रकार राजा पाप मुक्त हुआ और उन्हें विष्णुलोक में स्थान प्राप्त हुआ। उस दिन से पाप और नरक से मुक्ति हेतु भूलोक में अश्विन कृष्ण चतुर्दशी दिन का व्रत प्रचलित है।

नरकचतुर्दशी का व्रत विधान

नरकचतुर्दशी के पवित्र दिन साधकों को अपने कल्याण हेतु यहाँ बताये गये पूजा आदि कर्म करने का विधान है।

(१) रूप चतुर्दशी विधान

प्रातःकाल जागकर दंतमंजन करके शरीर पर तिल तेल का मालिश करे। हल की नोच के निकाली गई मिट्टी, तूंबडी की वेल और अंघेडवृक्ष की डाल से नीचे दिये गये मंत्र से अपने शरीर पर बार बार प्रोक्षण (छंटकाव) करे।

सिवालोष्ट समायुक्तं संकटदलान्वितम्।
हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः।।

इस के बाद शुद्ध जल से स्नान करे। इस पवित्र दिन प्रातःकाल पवित्र स्नान करने का बहुत महत्व है। स्कंद पुराण में वर्णन है कि इस दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पहले जो कोई स्नान नही करते वो लोग दरिद्र बनते है और उसका शुभ कार्य नाश होता है।

(२) यमतर्पण विधान

नरकचतुर्दशी के दिन संध्याकाल स्नानादी कर्म पूर्ण करके शुद्ध वस्त्र परिधान करके भाल में तिलक, गले में जनोइ धारण करे। ताम्रपात्र में शुद्ध जल भर के इसमें काले और सफेद तिल मिश्रित करके हथेली में दर्भ रख के यमराजा को तर्पण करे।

(१) ॐ यमाय नमः (२) ॐ धर्म राजाय नमः (३) ॐ मृत्यवे नमः (४) ॐ अन्तकाय नमः (५) ॐ वेवस्वताय नमः (६) ॐ कालाय नमः (७) ॐ सर्वभुर्तक्षाय नामः (८) ॐ औदुम्बराय नमः (९) ॐ ददनाय नमः (१०) ॐ नीलाय नमः (११) ॐ परमेष्टिने नमः (१२) ॐ वृकोदराय नमः (१३) ॐ चित्राय नमः (१४) ॐ चित्रगुप्ताय नमः

यमतर्पण में हम दोनों प्रकार के तिल का प्रयोग करते है। इस का प्रमुख कारण यह है की, यमराज उभय स्वरूप देवता है। धर्मराज रूप से देवत्व और यमराज रूप से पितृत्व की पूजा हो जाती है।

(३) दीपदान विधान

संध्या समय (प्रदोष काल में) तिल तेल से चौदह दीपों को प्रज्वलित करके यमराजा का उपरोक्त चौदह नाम का उच्चारण करे और मंत्र बोल के दान का संकल्प करे।

यममार्गान्धाकार निवारणार्थे चतुर्दशीदीपा दानकरिष्ये।

बाद में दीप, मंदिर, मठ, बाग, बगीचे, बावली, गोशाला, चौराहा ऐसी जगह पे प्रस्थापित करे। इस विविध विधान से यमराज बहुत प्रसन्न होते है।

(४) नरकचतुर्दशी विधान

संध्याकाल में चार दिवेटवाला दीप प्रज्वलित करके पूर्वाभिमुख हो के ये मंत्र का अनुष्ठान करे।

दत्तो दीपश्चतुर्दश्यां नरक प्रीत्ये मया।
चतुर्वर्ति समायुक्तः सर्वपापानुत्तये।।

बाद में हाथ में प्रज्वलित मशाल को लेकर चौराहा तक पदयात्रा करे और ये मशाल चौराहा पर छोड दे। इस विधान से हमारे पितृओं को स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है और हमारे पूर्वज पितृओं ऊर्ध्वगति को प्राप्त करता है।

(५) हनुमान जयंती

हनुमानजी के जन्म पर दो मत रहा है (१) चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (२) अश्विन कृष्ण चतुर्दशी

अश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि।
भौमवारे अंजनादेवी हनुमन्तमजी जनत्।।

अश्विन कृष्ण चतुर्दशी भौमवार मध्यरात्रि को अंजनादेवी ने हनुमानजी को जन्म दिया था। ऐसी कथा भी प्रचलित है।

विशेष अनुष्ठान विधान

- हनुमान चालीसा, हनुमानजी कवच और सुंदरकांड का पाठ करने से हनुमानजी अति प्रसन्न होकर मनोकामना पूर्ण करता है।

- सांयकाल को कालिमाता की भी उपासना करने का विधान है।

- नरकचतुर्दशी मध्यरात्री में किया गया मंत्र जाप सिद्ध होता है। इस तरह नरकचतुर्दशी व्रत मानव को नरक से मुक्ति देकर स्वर्ग और वैकुंठ की गति प्रदान करता है।

जय श्रीमन्नारायण...

प्रकाशपर्व दीपावली

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

दिवाली (२७.१०.२०१९) के अवसर पर...

भारत वर्ष में मनाये जानेवाले सभी त्यौहारों में दीपावली का महत्व सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अधिक है। इसे दीपोत्सव भी कहते है।

''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' अर्थात् अंधेरे से ज्योति अर्थात प्रकाश की ओर जाइये यह उपनिषद की आज्ञा है।

माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्रीरामजी अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्या वासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से प्रफुल्लित हो उठा था। श्रीराम के स्वागत में अयोध्या वासियों ने घी के दीपक जलाये, अश्विन मास की ये अमावस्या रात्रि रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रतिवर्ष यह प्रकाशपर्व हर्ष उल्लास के साथ बडी धूमधाम से मनाते आये है। दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है। कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती है। लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का कार्य आरंभ कर देते है। घरों में मरम्मत, रंग रोगान आदि कार्य होने लगता है। लोग दुकान अपना घर साफ सुथरा कर सजाते है। बाजार में गलियों में सुनहरी रंगबिरंगी तोरण लगाये जाते है।

कहा जाता है कि इस पवित्र समय में लक्ष्मीजी धरातल पर पधारते है- इसलिये हम घर, दुकान को साफ सुथरा करके सजाते है।

दीपावली का माहात्म्य और वर्णन अनेक पुराणों में वर्णीत है। स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, भविष्य पुराण और विशेष ग्रंथों में अलग अलग मान्यताये मिलती है।

दीपावली का माहात्म्य

१. महाराज पृथु ने पृथ्वी ने दोहन करके हमारे देश को धन धान्य से समृद्ध किया इस खुशी में दीपावली पर्व मनाते है।

२. देवासुर संग्राम में श्रीमहालक्ष्मीजी का प्रादुर्भाव हुआ इस खुशी में दीपावली मनाने की परंपरा है।

३. नरकचर्तुदशी के दिन श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन से सत्यभाम ने सोलह हजार कन्या को मुक्ति दिलवाई इस खुशी में दूसरे दिन भगवान श्रीकृष्ण का अभिवादन उत्सव मनाया गया वही दिवाली कहते है।

४. पांडव अपना वनवास कुशलमंगल पूर्ण करके हस्तिनापुर वापस लौटे इस की खुशी में प्रजा ने दीपमाला जलाकर पांडवों का अभिवादन किया था, इस प्रसंग को भी दीपावली कहते है।

५. प्रभु श्रीराम, लक्ष्मण और सीता चौदह वर्ष की वनवास पूर्ण करके, रावण का संहार करके विजय प्राप्त करके अयोध्या वापस लौट इस खुशी में सब भारतवासियों ने अपना घर गली, महोल्ला को सजाकर दीपमाला प्रगट की इस पर्व को हम दीपावली कहते है।

पाठकों, लेखक-लेखिकाओं और एजेंटों को
दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएँ...
श्री बालाजी का कृपाकटाक्ष सभी पर भरपूर हो...
- प्रधान संपादक

६. उज्जैन सम्राट विक्रमादित्य के सुराज्य शासन पर्व का स्थापना दिन को प्रजा ने दीपमाला जलाकर अभिवादन किया था।

७. भगवान श्रीकृष्ण ने अपने स्थूल शरीर को त्याग कर ऊर्ध्वगमन किया था यह दीपावली का समय था।

८. भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण करके तीन डग में सारे संसार को नाप लिया और बलिराजा को पाताल का साम्राज्य दिया यह पवित्र दिन था।

९. महर्षि दयानंद सरस्वती का निर्वाण दिन दीपावली है।

१०. स्वामी रामतीर्थ दीपावली के दिन जन्मे थे और इसी दिन जलसमाधि भी ली।

ऐसी कई घटनाये दीपावली के दिन घटी है। इसलिये विविध प्रकार से दीपावली का महत्व है इसीलिये दीपावली पर्व बडी धूमधाम से मनाते है।

ब्रह्मपुराण में वर्णन है कि दीपावली की मध्यरात्री के समय श्री महालक्ष्मीजी महाराणी स्वरूप लेकर सद्गृहस्थों के आवास में विचरण करते है। और वे भी देखते है की कहा-कहा मेरी पूजा... आराधना... उपासना हो रही है, इस अवसर में इसलिये हम दीपमाला प्रज्वलित करके आंगन और घर को स्वच्छ करके, नया वस्त्र धारण करके परिवार के साथ मध्यरात्रि तक हम महालक्ष्मीजी की षोडशोपचार और राजोपचार महापूजा करते है। इस महापूजा और आराधना उपासना मंत्र जाप से प्रसन्न होकर महालक्ष्मीजी हमारे घर में, जीवन में, सुख, समृद्धि, धन, धान्य, विद्या, शांति और भरपूर प्रदान करता है। और हमारे घर में स्थिर निवास करते है।

त्रिदेवीपूजन और हीसाबपोथी पूजन

तीनों देवियों का पूजन करने का शास्त्र विधान है। व्यापारी लोग अपने व्यापार का हिसाब रखते है, वो सब हिसाब पोथी में लिखते है। दीपावली के दिन गौधुलिक समय में, शुभ चोघडीये में हिसाब पोथी का पूजन करना चाहिए। इस में गणेशजी के साथ तीनों देवी का पूजन, आराधना करने से व्यापार, रोजगार में बढती होती है और व्यापार में श्री लक्ष्मीजी की कृपा बनी रहती है।

दीपावली पर्व में विशेष प्रकार के अनुष्ठान

१. दीपावली पर्व में दूध, मलाई, मधु, केसर, गंगाजल, मिश्री मिश्रित करके श्री यंत्र की रूप को मंत्रोच्चार करके श्री यंत्र पर अभिषेक करने से श्री यंत्र सिद्ध होता है।

२. मोती शंख का भी अधिक महत्व है, मोतीशंख और लक्ष्मीजी दोनों की उत्पत्ति समुद्र से हुई है। इस हिसाब से दोनों भाई-बहन हुए। इस मोतीशंख का पंचामृत से अभिषेक करके हल्दी मिश्रित चावल से उस की पूजा करने से साधक पर श्री महालक्ष्मीजी की कृपा अपार रहती है।

३. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐमहालक्ष्म्यै नमः। मंत्रानुष्ठान अधिकतर फलदायी है।

४. दीपावली की मध्यरात्रि को ये मंत्र के संपूट के साथ श्री सूक्त का पठन करने से लक्ष्मीजी अधिक प्रसन्न होता है।

५. दीपावली पर्व में कनकधारा स्तोत्र, श्री लक्ष्मी अष्टक स्तोत्र, श्री सूक्तम्, श्री लक्ष्मीमंत्र का अगणित मात्रा में जप पाठ करने से हमारे घर-परिवार पर श्री महालक्ष्मीजी की कृपा अपार रहती है।

तो आईये हम परिवार के साथ दीपावली पर्व में श्री महालक्ष्मीजी का अभिवादन करें।

(गतांक से)

दिव्यक्षेत्र तिरुमल

तेलुगु मूल - श्री जूलकंटि बालसुब्रह्मण्यम्

हिन्दी अनुवाद - श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

अचंभे की मिन्नतें

'खोपड़े-खोपड़े में बुद्धि और जिह्वा-जिह्वा पर रुचि आलग-अलग!' नाम की कहावत के अनुसार, विचार चाहे जितने भी क्यों न हों, उन-उन विचार-धाराओं के अनुरूप चाहे जितनी भी अभिरुचियाँ भी क्यों न हों - उन-उन विचारों एवं अभिरुचियों केलिए योग्य भगवान हैं - श्री तिरुमलेश व श्रीवेंकटेश्वरस्वामी।

भक्तों के आचार-विचारों के अनेक होने पर, उनकी भाषाएँ एक न होने पर भी, मिन्नतों के अचंभे तरीके से चुकाने पर भी-उन सबको एक मानते हुए, अपना समझते हुए, उनकी इच्छाओं की पूर्ति करने वाला महादेव है। तिरुमल के श्रीनिवासमूर्ति।

दरअसल, मिन्नतों के मामले में ही श्री श्रीनिवास भगवान अपने भक्तों को अपने पास बुलाता है। मिन्नतों के समर्पण में - स्त्री, पुरुष, छोटा-बड़ा भेद न रखते हुए, बिलकुल ही कुछ लोग आपाद-मस्तक-लूट देते हैं। सिरों के बाल मुँडाते हैं। सिरों के केश स्वीकार कर, जीवन के उलझनों को सुलझा कर आनंदमान मनस्क नबाने का विचित्र स्वामी है - श्री वेंकटेश महास्वामी।

सामान्य ही नहीं वरन् मान्य और असामान्य भी इस कलियुग अधिनायक के चरणों-तले अपना मत्था टेक अशीस ले जाते हैं।

विजयनगर के सम्राट् श्रीकृष्णदेवराय ने ई. के १५१३ से १५२१ तक सात बार तिरुमल महानगरी की यात्रा तय

कर, नवरत्न-खचित हार, क्षीर के पान के वास्ते सोने के पान-पात्र, मकर तोरणों के साथ-साथ श्री आनंदनिलय के विमान-गोपुर पर सुवर्ण को पोतने के लिए अनगिनत सोने की मोहरों को समर्पित किया था। इसी श्रुंखला के अंदर अच्युतराय तथा वेंकटपतिरायलु ने अनगिनत उपहार भेंट में दिया था। उससे पहले ई. के ६१४ में पल्लवरानी ''सामवाई'' ने चान्दी के श्रीनिवास की मूर्ति भेंट कर, ब्रह्मोत्सवों में सर्व प्रथम ग्रामोत्सव में विचरने की प्रथा बनायी थी।

तुलाभार, आलय की प्रदक्षिणाएँ, अंग-प्रदक्षिणाएँ, अखंड दीपाराधनाएँ ऐसे श्रीस्वामी पर समर्पित की जानेवाली मिन्नत व उपहारों की भी क्या गिनती?

विचित्र वरदान और आनंदकर लीलाएँ

कोंडलरायडू (पहाडी सम्राट्) ''अभीष्ट फलों का सम्राट्'' है। जैसे अन्नमय्या ने कहा था -

''जो चाहे दे कभी भी
बिन भूले भजने पर यही दैव है।।''

यह स्वामी कुछों को आँख और कुछ लोगों को पाँव देता है। काम करने हाथ देता है। बात देता है! प्राण देकर पुनर्जीवित कर देता है। पदवी-योग देगा, पेट भरता है; पेट फला कर, संतान का भाग्य देता है।

''श्रीनिवासा! बहूक्त्या किं? भक्त सर्वार्तिनाशने
सर्वार्थ पूरणे चापि त्वत्समोंडे न कुत्रचित्।।''

अजी! तुम्हें सराहना क्यों कि - भक्तों को तुम यह देते और वह देते कहते हुए? भक्तों की समस्त आर्त्तियों को दूर करते हुए, समर्थ अर्थों का प्रसादन करने वाले तुम-सरीखे देव इस ब्रह्मांड में कहीं नहीं अथवा कोई नहीं! इस प्रकार भक्तों से सराहा जाता है तिरुमलेश महाप्रभु!

तिरुमल पुण्यक्षेत्र के, तदनंतर काल में शेषाद्रि, गरुडाद्रि, वेंकटाद्रि, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाद्रि, अंजनाद्रि नाम के सात प्रधान नाम हुए। इसी कारणवश या इन नामों की वजह से यह पवित्र क्षेत्र 'सात पहाड' या 'सप्तगिरियाँ' नामों से पुकारा जा रहा है। यह बात बहुत मुश्किल है कि इस क्षेत्र के अन्य कितने नाम हैं। शिवाय केवल इन सात नामों के अलावा बताना।

इसी तरह इस पुण्यक्षेत्र में दर्शन देते हुए खड़े हुए स्वामी भगवान बालाजी के ''सात पहाड़वाला, शेषाचलपति, श्रीवेंकटपति, अंजनाद्रीश्वर, वृषभाद्रीश्वर, तिरुमलेश, श्रीनिवास'' इत्यादि कई प्रख्यात नाम हुए!

भक्तों के लिए ही श्रीवैकुंठ से उतर कर आये हुए श्रीवेंकटेश्वर भगवान बालाजी का स्मरण-मात्र करना पर्याप्त है! सारे पाप धुल जायेंगे। उस देव की स्तुति करना बस है! सभी इच्छाओं की पूर्ति हो जायेगी। उस देवदेव के संदर्शन-मात्र से मुक्ति मिल जाती है। ऐसे श्रीनिवास भगवान को नित भजते हुए! स्वामीजी, उसके आवास-स्थल तिरुमल पवित्र क्षेत्र के माहात्म्य के बारे में संक्षेप में जानकारी प्राप्त करते हैं।

'स्मरणा त्सर्वपापघ्नं स्तवना दिष्टवर्षिणम्।
दर्शना न्मुक्ति दं देशं श्रीनिवासं भजेऽनिशम्।।''

५. तिरुमल की संक्षिप्त गाथा

तिरुमलक्षेत्र में भगवान श्रीबालाजी से पहले 'आदि वराहस्वामी' बसा हुआ था! इस कारण यह आदिवराहक्षेत्र कहलाता है। आदिवराहस्वामी असल में कौन है? यहाँ वह क्यों आया हुआ था? वह यहाँ कब आया था? - इस सब जानकारी के लिए हमें हजारों साल पुराने घटे इतिहास की गाथा में प्रस्थान करना चाहिए।

वराहावतार

एक समय में ब्रह्मदेव सृष्टि करते-करते खूब थर गया था। इस तरह थके-माँदे ब्रह्म को गाढ़ी नींद आ गयी, तो वह सो गया। तब क्या हुआ कि उसकी की हुई सृष्टि में बड़ी खलबली मच गयी। और जल-प्रलय उठखठा हो गया। इसी मौके को अपना कर हिरण्याक्ष नामक आर्ष धर्म के विरोधी राक्षस ने भूमी को ले कर समुंदर के अंदर ले जाकर उस गोले को उछलते, लात मारते, उसे गेंद की तरह खेलते हुए नाना हंगामा किया। इस गलाटे से नींद से जागे ब्रह्म ने रक्षा करने-हेतु श्रीमहाविष्णु की शरण ली।

ब्रह्मदेव की प्रार्थना से सतर्क हुए विष्णु भगवान ने झट एक बड़े वराहरूप धारण कर हिरण्याक्ष का वध कर, अपने दाँतों से भूदेवी की रक्षा की थी। सब देवताओं ने धरती माँ की रक्षा किये हुए महाविष्णु को खूब सराहा और उससे प्रार्थना की कि वह अपने वराह-रूपी अवतार लेकर, अपनी पत्नी भूदेवी-समेत वहीं तिरुमल-गिरि पर वास करे!

देवताओं की इस मिन्नत पर महाविष्णु ने अपने वराह रूप से तिरुमलगिरि पर बस गया। महाविष्णु ने गरुतमान् को वैकुंठ भेज कर वहाँ की पुष्करिणी शेषाद्रि पर स्थापित की और साक्षात् वैकुण्ठ को ही तिरुमलगिरि पर बसाया। उस दिन से तिरुमलगिरि ''आदि वराहक्षेत्र'' एवं गरुतमान् के द्वारा लाये सरोवर ''स्वामिपुष्करिणी'' नाम से पुकारे जाने के साथ बहुत विख्यात हुए। यह है आदिवराहक्षेत्र की गाथा।

इस घटना के हजारों सालों के अनंतर इस क्षेत्र में श्रीवेंकटेश्वरस्वामी अया था। चलो अब यहाँ तिरुमलगिरि पर श्रीवेंकटेश्वर भगवान के कदम रखने की और उस स्वामी का यहीं बस जाने की कारणभूत कथा बता लें!

यज्ञ की कथा

कलियुग आरंभ हो गया था। हालांकि देवताओं ने पांडवों के रूप में पैदा हो करके, द्वापरयुग में, कलिपुरुष दुर्योधन की जाँघे तोड़ ठाली थी, मगर

फिर भी उसके अनुयायी कलियुग में पैदा हो करके, खूब अशांति पैदा करने पर तुले हुए थे। ऊपर से उन-उन युगों में हुई धर्म की हानि के कारण युग-संचालक तथा वाहिका का एक-एक पैर नष्ट हो चुका था। आज धर्मदेवता कलियुग में एक ही एक पैर से इतने कल्लोलित महाकलियुग को ढोते हुए पार कराना पड़ रहा है!

इन सब मुद्दों को मद्दे-नजर रखते हुए पावन गंगानदी को तटपर भृगु, अगस्त्य, भरद्वाज, कण्व, अत्रि आदि मुनि इकट्ठा होकर - एक चरणवाली धर्मदेवता की सहायता में, कलि-शांति महायज्ञ आरंभ कर दिया था। लोक-कल्याण के हेतु ऋषिलोग महा यज्ञ कर रहे थे।

वेद-मंत्र गूँज रहे थे। मंगलवाद्यों का नाद सारे गंगा-किनारे पर प्रतिध्वनि हो रहे थे। सर्व जन वहाँ आह्लाद थे। बड़ा कोलाहल उधर, उस पावन गंगानदी के तट पर मचा हुआ था।

इतने में नारायण, नारायण!! का नाद निकल हुए देवर्षि नारद वहाँ आ पहुँचा था, मानो आसमान से टपक पड़ा हो। सब लोग आनंदमान मनस्क हुए। नारदमहर्षि का आगमन उस समय उन्हें काफी अच्छा लगाथा। नारद एक-वक्त पर आया था। यह एक शुभ-संकेत था। सब लोगों ने महर्षि नारद की सादर अगवानी की थी। नारद को सादर आतिथ्य मिला था।

यों तो नारद ने महर्षियों के इस कल्याण कारी जतन को खूब सराहा और कहा कि इस पावन गंगा-तट पर होते हुए यज्ञ को देवताओं का अनुमोदन है। लोक-कल्याण के लिए इस तरह महर्षियों का ''कलि-शांति'' यजन का आरंभ करना बहुत ही स्फूर्तिदायक और स्तुतिदायक है!!

ऐसा महार्षियों के जतन को सराहते-सराहते नारदमहर्षि ने बात की बात में उनसे पूछा कि इस महान् क्रतु का यजमानी और यागभोक्ता के तौर पर त्रिमूर्तियों में किसे चुन कर नियुक्त किया है!!

ब्रह्मर्षि नारद के इस सवाल पर सब महर्षियों ने एक का मुख एक ताकते रह गये और महर्षि के प्रश्न का कोई जवाब निकाला। आखिरकार उन्होंने नारद से कहा कि अभी कलिशांति यज्ञ का कोई यागभोक्ता चुन न लिया गया है!

इस पर नारद ने विचार व्यक्त किया कि समर्थ यागभोक्ता के अभाव में इतना बड़ा यज्ञ संभव न हो पायेगा!! चलो, अब तुम लोग त्रिमूर्तियों में से किसी एक को इस पवित्र क्रतु का यजमानी चुनो!!

पुनः नारद ने उन महार्षियों से सवाल किया कि देवताओं में त्रिमूर्ति-ब्रह्म, विष्णु, महेश्वरों में सर्वाधिप कौन है? इनमें लोक-कल्याणकारी पुरुष कौन है? भक्तों में माँगे जाने पर झट वरदायी महात्मा कौन है? भक्तों की अभीष्ट पूर्ति करेगा कौन? स्मरणमात्र से सर्व भक्तों का पाप-हरण कर, समस्त शुभ देने वाला दिव्य पुरुष कौन? आगामी कलुषमयी कलियुग के दोषों का हरण कर, कलि से त्रस्त मानव जाति का उद्धार कौन करेगा? उनकी रक्षा करने का देवादि देव तथा देव-नायक कौन है? पहले तुम लोग इस बात का निर्णय करो, फिर कलिशांति क्रतु का आरंभ करो!! तभी आपके यजन-कार्य की सिद्धि होगी। आपकी इस महान कामना का फल मिलेगा। अवश्य जगत के कल्यण के आशय की साधना होगी! इस प्रकार मुनियों तथा महर्षियों को लोकनायक शक्ति के चयन का आदेश देकर महर्षि नारद अंतर्द्धान हो गया!! (क्रमशः)

श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का मंदिर - तोंडमनाडु

तेलुगु मूल
श्रीमती मोलका उत्तरफल्गुणी

हिन्दी अनुवाद
डॉ.एम.रजनी

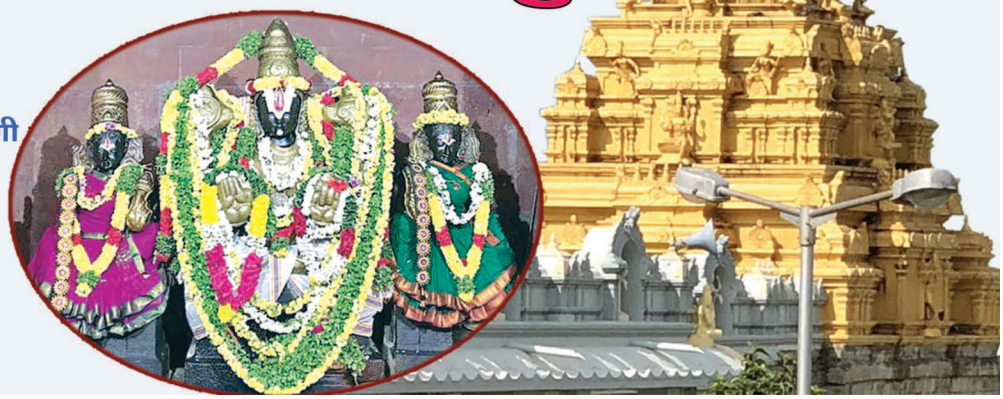

विश्वविख्यात तिरुमल क्षेत्र को अद्भुत वैभव और बेजोड यश प्राप्त करानेवाले मंदिरों में 'तोंडमनाडु' एक है। सम्राट तोंडमान की इच्छा के अनुरूप श्री वेंकटेश्वरस्वामी श्रीदेवी भूदेवी सहित यहाँ पर विराजमान हुए है। आकाशराजा के शासन का नारायणवनम राज्य को आधा हिस्सा में बाँटकर अपने राजधानी का निर्माण किया। तोंडमानाडु के नाम से यह 'तोंडमनाडै' उत्तरोत्तर काल में 'तोन्डमण्डलम' के नाम से भी बुलाया गया। विजयनगर सम्राटों के काल तक इस प्रदेश का भूभाग उस नाम से ही प्रसिद्ध हुआ। यह तिरुपति से तीस किलो मीटर दूर में और श्रीकालहस्ति से लगभग ५ कि.मी. दूर में विराजमान है।

स्थल पुराण

सम्राट तोंडमान शासन करनेवाले राज्य में स्वामी आकर विराजित होने के संबंध में कई कहाँनिया प्रचलित हैं। वे तिरुमल बालाजी के परम भक्त थे। तोंडमान सम्राट हरदिन सुरंग मार्ग से तिरुमल जाकर श्री स्वामीजी की पाद सेवा करके लौटने के बाद ही राज्य का व्यवहार संभालते थे। उसी सिलसिले में एक बार युद्ध में मदद करने केलिए जल्दी से स्वामी के मंदिर में प्रवेश किया। उस समय भगवानजी श्रीदेवी और भूदेवी के साथ थे। तोंडमान को अचानक देख कर देवेरियाँ एक सोने की कुआ में और एक तो स्वामीजी के वक्षःस्थल में जाकर छुप गयी थी। इस कारण स्वामीजी बहुत नाराज हो गये। भगवान ने कहा कि आज से तुम मत आओ मैं ही तुम्हारे पास विरजानदी सहित आऊँगा यह एक कथन है। अधिक आयु होने के कारण तोंडमान तिरुमल को न जा सकने की प्रार्थना पर स्वामी तोंडमनाडु में ही आकर विराजित होना दूसरा कथन है।

एक बार एक बाह्मण काशी यात्रा को जाते हुए तोंडमान के पास आकर काशी क्षेत्र से जब तक वे नहीं लौटेंगे तब तक अपनी बीबी बच्चों की संरक्षण करने की माँग करते हैं। ऐसा ही कहकर उनको वर देकर, एक कमरे में रखकर खानापानी दिये बिना उनकी पालन-

पोषण करना भूल गये। कुछ दिन बाद वह ब्राह्मण आकर अपनी बीबी बच्चों को अपने को सौंपने की इच्छा व्यक्त करते हैं। तब उन्हें उनको पूरी तरह से भूलजाने की बात याद आती है। लेकिन उस विप्र से ऐसा कहते हैं कि तुम्हारे बीबी बच्चे स्वामीजी के दर्शन केलिए तिरुमल गये हैं, वे कल आयेंगे तब आकर आप उनको ले जाइए। फिर तोंडमान स्वामी के पास आकर उनको जिलाने की इच्छा व्यक्त करते हैं। भगवान ने उनकी बात मान कर उनको जीवित किया। यह एक दूसरा कथन है कि तब से स्वामी तोंडमान से बातें करना बन्द कर दिया गया। कारण जो भी हो स्वामी तोंडमान के पास जाकर पूजा प्राप्त कर रहे हैं। यह तोंडमान कौन है? भगवान और उनके बीच का रिश्ता क्या है? उनकी पूर्वजन्म की कहानी क्या है? इसके बारे में जानेंगे।

तोंडमान का पूर्वजन्मवृत्तांत

पूर्वकाल में गोपीनाथ नाम का एक वैखानसमहामुनि ने श्रीकृष्ण के ऊपर अटूट भक्ति भावना को अपने दिल में रखा था। इसलिए श्रीकृष्ण भगवान को प्रत्यक्ष रूप से देखने की इच्छा से सोना और खानपान सब कुछ त्याग कर अखंड दीक्षा से तप किया था। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर स्वयं श्री महाविष्णु प्रत्यक्ष होकर पूछा कि तुम्हें क्या वर चाहिए बोलो। कृष्णावतार के आँखों से देखकर सेवा करने की इच्छा प्रकट कि थी। तब स्वामी ने कहा कि- प्रस्तुत स्वामी शेषाद्री में श्रीकृष्ण ही श्रीनिवास के अवतार में एक बिल में है। उस स्वामीजी की सेवा करके धन्य बनो।

इससे गोपीनाथ ने बहुत खुश होकर उस स्वामी की पूजा करने केलिए उस बिल के पास गया। स्वामी को पूजा करने का फैसला लेकर, 'रंगदास नामक सेवक से, ओ रंगदासु! इस बिल में स्वामी को फूलों से पूजा करने से स्वामी बहुत खुश होकर जल्दी मुक्ति देंगे। इसलिए तुम एक फूल की बगीचा को बढाओ। उनकी पूजा केलिए फूलों को एकत्रीत करो ऐसा आदेश दिया'। फूलों की बगीचे केलिए पानी चाहिए इसलिए एक कुआ को खोदा गया था। उसको ''फूलों का कुआ'' नाम रखा था। उस कुअे की पानी से फूल के बगीचा को सिंचित किया गया। बगीचे के फूल को हर दिन पूजा केलिए गोपिनाथ को देता था।

एक दिन एक गंधर्वराज अपनी पत्नियों के साथ फूलों का कुआ के पास स्थित स्वामिपुष्करिणी में जलक्रीडाएँ खेलता था। स्वामी की सेवा केलिए फूल केलिए आया रंगदास उनकी क्रीडाएँ देखकर अपने आप को भूल कर स्वामीजी की पूजा केलिए समय आसन्न होने पर भी वही पर रह गया। फिर होश में आकर फूल तोड कर जल्दी-जल्दी से गोपीनाथ के पास गया था। मुनी देर से आने केलिए कारण पूछा था। रंगदास ने वहाँ की कहानी बताकर अपने को क्षमा करने की प्रार्थना किया।

तब श्रीनिवास प्रत्यक्ष होकर हे रंगदास! चिंता मत करो, तुम मेरे सम्मोहन के कारण गंधर्वों के भोगों पर भ्रांति पाया। इस में तुम्हारी कोई गलती नहीं है, मुझे अद्वितीय से सेवा करने का भाग्य तुम को दे रहा हूँ। इसलिए तुम इस शरीर को छोडकर नारायणपुरम को शासन करने वाला सुधर्मराजा के बेटा बनकर ''तोंडमान के नाम से जन्म लेकर राज्य सुखों को भोग कर, मेरी सेवा करके अपना जीवन को सार्थक बनाओ'' ऐसा कहकर वे अदृश्य हो गये। रंगदास ही अगले जन्म में आकाशराजा के भाई ''तोंडमान'' के रूप में जन्म लिया था।

तोंडमान का वृत्तांत

तिरुपति के पास ''नारायणपुरम'' नामक प्रांत है। उसको राजधानी बनाकर सुधर्म नामक राजा शासन करते

थे। उनके बेटा का नाम ही आकाशराजा। एक दिन सुधर्म शिकार खेलने केलिए जंगल गया, वहाँ शिकार खेलने की वजह से थक कर आराम करने केलिए कपिलतीर्थ पहुँच कर आराम किया। उस समय एक नागकन्या कपीलतीर्थ में स्नान करके आती थी, उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर उस नागकन्या से गंधर्व विधी के अनुसार विवाह किया। नागकन्या और सुधर्म दोनों का संतान ही 'तोंडमान'। सुधर्म के अंतिम दिनों में बडा बेटा आकाशराजा को सिंहासन और भाई तोंडमान की जिम्मेदारी उनको सौंप कर, वे परलोक सिधारे। आकाशराजा की पत्नी धरणीदेवी थी। दोनों ने जनता को बहुत प्यार से देखते हुए राज्य का शासन किया।

पद्मावती-श्रीनिवास का परिणय

आकाशराजा और धरणीदेवी दंपतियों को बहुत दिनों तक संतान नहीं हुआ। दैव कृपा के कारण एक लडकी उनको जमीन में मिली। उस शिशु को वे पद्मावती नाम रखा। उस के बाद धरणीदेवी गर्भधारण करके एक लडका को जन्म देती है। उस बच्चे को वसुदान नाम रख कर उसका पालन-पोषण करते हैं।

लक्ष्मीदेवी रूठ कर वैकुण्ठ से चली जाने के बाद स्वामी विरागी बनकर वैकुण्ठ को छोडकर भूलोक में वेंकटाचल में वकुलमाता की सेवा में 'श्रीनीवास' नाम से जीवन बिताने लगे। धीरे-धीरे श्रीनिवास और पद्मावती के बीच प्यार जागृत हुआ। यह बात जानकर राजदंपतियों ने अपनी लडकी के लायक वर मिलने से बहुत खुश हुए। बृहस्पति से समालोचना करके वैशाखा शुक्ल दशमी शुक्रवार के दिन श्रीनिवास को पद्मावती देकर तोंडमान के समक्ष धूमधाम से विवाह संपन्न हुआ था।

विवाह दीक्षा के कारण नूतन दंपति छः महीने तक पहाड चढना निषेध है। इसलिए सुवर्णमुख तीर के ऊपर स्थित अगस्त्यश्रम में रहने केलिए निश्चय किया था। एक दिन उनको समाचार मिलता है कि आकाशराजा मरण शय्या पर है। यह खबर सुनते ही वे नारायणपुरम गये। वहाँ आकाशराज श्रीनिवास से स्वामी! अंतकाल में तुम्हारा दर्शन किया। तुम्हें दामाद के रूप में पाकर मेरा जन्म सार्थक हुआ। मेरा बेटा और भाई को मैं आप को सौंपता हूँ। वे भोले है उनका देखभाल आप ही करना कहकर आराम से आँख बन्द कर लिया। कुछ दिनों के बाद धरणीदेवी भी मर गयी। पद्मावती श्रीनिवास ने राज्य को तोंडमान और वसुदान को सौंप कर अगस्त्याश्रम को चले गये।

आकाशराजा की मौत के बाद राज्याधिकार केलिए तोंडमान, वसुदान के बीच में झगडा हुई, दोनों श्रीनिवास के पास जाकर अपने पास रहकर मदद करने की प्रार्थना की। भगवान ने भक्त तोंडमान कि शंखचक्र देकर, वसुदान के पक्ष में

रहकर युद्ध किया। यह बात जानकर पद्मावती वहाँ आकर दोनों के बीच संधि करके राज्य को दो भागों में बाँट कर एक एक हिस्सा को दिया। तोंडमानु की 'तुण्डीरमण्डल' और वसदान की 'नारयणपुराम' को दिया गया।

एक दिन तोंडमान श्रीनिवास के दर्शनार्थ केलिए आये थे। तब स्वामी (भगवान) ने तोंडमान से तिरुमल में अपनेलिए एक मंदिर का निर्मण करने केलिए आदेश दिया। श्रीनिवास के आदेश के अनुसार तोंडमान ने अद्भुत, रत्नखचित, सुवर्णकलश से प्रकाशित मंदिर का निर्माण किया। उस मंदिर के चारों ओर तीन प्राकारों से, तीन प्रदक्षिण मार्गों में मंडपों, पाकशाला और सोने की कुआ का आयोजन किया गया। इस आलय को ही 'आनंदनिलय' कहा गया। आनंदनिलय विमान के ऊपर एक 'श्रीनिवासमूर्ति को प्रतिष्ठित किया गया। वे ही 'विमान वेंकटेश्वरस्वामी' है। इस प्रकार सकल देवताओं के समक्ष दिव्य मुहूर्त में आनंदनिलय के अंदर पद्मावती श्रीनिवासजी ने प्रवेश किया।

इस तरह श्रीनिवास को हर दिन सोने की पद्मों से पूजा करता था। ऐसा एक दिन स्वामी के पास मिट्ठी से फूल दिखाई दिया। मिट्ठी के फूल देखकर किसने यह फूल स्वामी को समर्पित किया कहकर आग बबूला हो गया। तब स्वामी ने कहा कि कुरवनंभि नामक एक भक्त ने हर दिन कुम्हार का काम करने के बाद बचा हुआ मिट्ठी से यह फूल बनाकर मुझे समर्पित कर रहा है। इतना बडा भक्त और महानुभाव को देखकर तोंडमान पश्चात्ताप से क्षमा की याचना करते हुए उस भक्त से बिदा लिया।

श्रीवारु ने तोंडमान को दी हुई बात के अनुरूप ही एक दिन विरजानदी के साथ विग्रहरूप में प्रत्यक्ष हुए। बाहर आकर देखने से पवित्र विरजानदी घर के सामने से तालाब की ओर बहते हुए दिखाई दिया। तोंडमान की इच्छा पूरी हुई थी। घर में भगवान का उद्भव हुआ। इसलिए उस वेंकटेश को ''वीटिल् पिरंद पेरुमाल'' (घर में पैदा हुए भगवान) के नाम से बुलाया गया। विरजानदी अंतर्वाहिनी बनकर तोंडमान के तालाब में बहने लगी।

यह पेरुमाल श्रीदेवी भूदेवी सहित आसनमूर्ति। अभय हस्त से गंभीर से विद्यमान है, तोंडमान ने उनकेलिए आलय का निर्माण करके मंदिर के ओर से किला का निर्माण किया। इनका 'आलय विमान' तिरुमल 'आनंदनिलय' विमान की तरह है। स्वामीजी ने श्रीदेवी भूदेवी सहित अपने छोटे मामा तोंडमान के घर आकर सेवाएँ प्राप्त की।

अलय का निर्माण शैली

तोंडमनाडु प्रांत में पेरुमाल स्वामी मंदिर में गर्भमंदिर के सामने स्थित अंतराल के द्वारबंध के ऊपर तोंडमान का विग्रह मुकुलित हस्तों से दर्शन दे रहा है। अंतराल के एक ओर लक्ष्मीनारायण की मूर्ति है। मुखमंडप में भगवद्रामानुजुलु, श्रीराम की मूर्तियाँ, दूसरी ओर हनुमानजी की मूर्तियाँ है। इस मंदिर के विमाननिर्माण तिरुमल का 'आनंदनिलय विमान' के जैसा है। इन दोनों को एक ही ने निर्माण किया यह बात स्पष्ट होता है। उसी तरह तोंडमान ने आकाशगंगा के पास एक तालाब खोद कर आकाश गंगा का पानी कपिलतीर्थ द्वारा तालाब में गिरे जैसा प्रबंध किया। यह तालाब ही 'तामरगुन्टा' (कमल के फूल सरोवर) के जैसा प्रसिद्ध हुआ। यही स्वामी केलिए अभिषेक जल के रूप में इस्तेमाल करते हैं। बैठे हुए भंगिमा में करीब दस कदम के ऊँचाई पर (भगवान) स्वामी है। यहाँ भी स्वामी को अर्चना, पूजा, अत्सव धूमधाम से मनाते हैं। सभी भक्त लोग यहाँ आकर स्वामी का दर्शन करके पावन बनते हैं। ति.ति.देवस्थानवाले २००८ वाँ वर्ष में इस देवालय को अपने अधीन में ले लिया गया। यह भी पुराणप्रसिद्ध मंदिर के रूप में शोभयमान है।

अक्तूबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेषराशि - नौकरी पेशे में अड़चने आयेगी। अपने अधिकारियों से विनम्रता से पेश आयें नुकसान हो सकता है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। शारीरिक स्थिति मध्यम रहेगा।

वृषभराशि - मानसिक कष्ट, चिन्ता रहेगा। कारोबार क्षेत्रों में अस्थिरता रहेगी। सरकारी पक्ष से लाभ के योग हैं। किसी अनजान व्यक्तियों से सम्बन्ध न बनायें कष्टप्रद हो सकता है।

मिथुनराशि - व्यापारिक कार्यों में उन्नति का योग है। भूमि-वाहनों का योग कम है। यह महिना कठिनाईयों से भरा हुआ है इससे बचने के लिए राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करें।

कर्कराशि - उलझनें ज्यों की त्यों बनी रहेगी। काम-कार्य में मन लगा रहेगा। व्यापार ठीक चलेगा। मासान्त में स्वास्थ्य में कुछ गिरावट आयेगी। आकस्मिक धन हानि के योग हैं।

सिंहराशि - यात्रा से कष्ट उत्पन्न होंगे, दुर्घटना के योग हैं। आकस्मिक आपत्ति अथवा खर्च के योग बन रहे हैं। पुलिस, कोर्ट-कचहरी के चक्कर में न पड़े भुगतना पर सकता है।

कन्याराशि - कोई शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। मन प्रसन्न रहेगा। अपनों का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। भूमि का लाभ होगा।

तुलाराशि - कोई नई अत्यन्त कष्टकारी घटना के योग बन रहे हैं। मानसिक चिन्ता से ग्रस्त रहेंगे। किसी उत्तरदायित्व की पूर्ति होगी। मास मध्य से अन्त तक किसी प्रभावशाली व्यक्तित्व से मुलाकात होंगी।

वृश्चिकराशि - अपने प्रियजनों से बच कर रहें वह आपको परेशान कर सकता है अथवा कष्ट दे सकता है। अनावश्यक दौड़-धूप से बचे। खर्च अधिक, लाभ कम की स्थिति है। भूमि-वाहन लाभ होंगे।

धनुराशि - अपने सहयोगीयों से मतभेद होने की सम्भावनायें बन रही है, इसलिए सोच समझकर अपने अधिकारों का प्रयोग करने से सुख शान्ति से समय व्यतीत होने की सम्भावना बन सकती है।

मकरराशि - भौतिक सुख-सुविधा के साधनों का लाभ मिलेगा। किसी अनजाने व्यक्ति से मुलाकात होगा। उत्सवों में जाने का अवसर मिलेगा। कारोबार क्षेत्रों में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

कुम्भराशि - जीवन साथी के साथ मन-मुटाव के योग हैं, प्रेम प्यार में कमी पैदा होगी। मास मध्य में आमदनी के स्त्रोत बढ़ेंगे, लेकिन ध्यान रखिए अनुचित तथा गुप्त काम लाभ की जगह हानि होगी।

मीनराशि - मित्रों से मतभेद होने की सम्भावनाएँ हैं। परिवार में किसी भी विशेष चिन्ता को लेकर तनाव ग्रस्त रहेंगे। मास मध्य में आमदनी के अच्छे योग हैं। मासान्त में आपकी योग्यता का लाभ मिलेगा।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : .....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
.....
पिनकोड .....
मोबाइल नं .....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नडा
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. पेय रकम :

६. पेय रकम का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाला का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नही है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाएँ और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

भक्तों की सेवा में...

ति.ति.देवस्थान के नेतृत्व में चालु मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसाद वितरण समुदाय में ति.ति.दे. के न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी पहुँचे तथा वहाँ उपस्थित भक्तों से विचार-विमर्श करते हुए अन्नप्रसाद सुविधाओं के बारे में जानकारी ली।

ति.ति.दे. के सौजन्य से हर वर्ष श्रावण मास में संपन्न 'मनगुडि' कार्यक्रम के अंतर्गत दि. ०८.०८.२०१९, गुरुवार को आंध्र, तेलंगाणा उभय प्रांतों में स्थित ११,५०० मंदिरों में पूजा सामग्री के वितरण के लिए तिरुमल श्रीवारि मंदिर में न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी और उनकी धर्मपत्नी ने विशेष पूजाएँ की।

दि. १६.०७.२०१९, मंगलवार को तमिलनाडु के प्रसिद्ध पुण्यक्षेत्र कांचीपुरम् में स्थित श्री वरदराजस्वामी मंदिर में ४० वर्ष को एक बार दर्शन देनेवाली भगवान श्री अत्तिवरदराजस्वामी के दर्शन महोत्सव के उपलक्ष्य में ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी और उनकी धर्मपत्नी ने रेशमीवस्त्रों को समर्पित किया।

दि. २३.०८.२०१९, शुक्रवार को गोकुलाष्टमी के अवसर पर ति.ति.दे. ने श्री वेंकटेश्वर गो संरक्षण शाला, तिरुपति के प्रांगण में स्थित श्री वेणुगोपालस्वामी के मंदिर में वैभव पूर्ण रीति में गोपूजा महोत्सव का आयोजन किया। इस संदर्भ में न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी ने गोपूजा महोत्सव में भागलिया, और इस कार्यक्रम में भागलेने वाले भक्तों को गोपूजा माहात्म्य तथा उसके वैभव के बारे में विवरण दिया। तदनंतर गोसंरक्षण के लिए ति.ति.दे. की ओर से आयोजित कार्यक्रम और भविष्य के विधि विधानों पर भाषण दिया है।

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Dr.K.Radha Ramana, M.A., M.Phil, Ph.D.,** Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri R.V.Vijaykumar,** B.A., B.Ed., **Dy.E.O.,** (Publications & Press), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

चित्तूर जिले के काणिपाकम में स्थित श्री वरसिद्धि विनायक स्वामी के ब्रह्मोत्सव के अंतर्गत १० सितंबर, २०१९ को न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी और उनकी धर्मपत्नी एवं विशेष अधिकारी, तिरुमल श्री ए.वी.धर्मारेड्डी और उनकी धर्मपत्नी ने ति.ति.दे. की ओर से रेशमी वस्त्रों को समर्पित किया।

चित्तूर जिले के काणिपाकम में स्थित श्री वरसिद्धि विनायक स्वामी के ब्रह्मोत्सव में तिरुमल श्री वेंकटेश्वर भगवान की तरफ से रेशमी वस्त्रों को समर्पण हेतु आए हुए ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी और उनकी धर्मपत्नी एवं विशेष अधिकारी, तिरुमल श्री ए.वी.धर्मारेड्डी और उनकी धर्मपत्नी को काणिपाकम मंदिर के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री देमुल्लु ने सादरपूर्वक आह्वान के बाद मंदिर के शिष्टाचार के अनुसार तीर्थप्रसादों को सौंपा गया।

तिरुपति के ति.ति.दे. श्री वेंकटेश्वर गो संरक्षण शाला में स्थित श्री वेणुगोपालस्वामी मंदिर में २३ अगस्त, २०१९ को गोपूजा महोत्सव धूम-धाम से मनाया गया। इस संदर्भ में न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वै.वी.सुब्बारेड्डी ने रामकोटि स्तंभ के पास रही पुस्तक में रामकोटि लिखा गया। भक्तों में श्रीराम नाम स्मरण भक्ति-मुक्ति कारक जैसे सबसे बड़ी प्रेरणा देने का दृश्य।

ति.ति.दे. ने तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी के मंदिर में श्री वरलक्ष्मी व्रत का आयोजन किया। इस में उन्नताधिकारी व भक्तगणों ने भाग लिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY
Published by Tirumala Tirupati Devasthanams 25-09-2019
Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742,
Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020 Licensed to post without prepayment
No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020